

त्याग के बिना कुछ भी पाना संभव नहीं है, एक सांस लेने के लिए भी एक सांस छोड़नी पड़ती है।

03 "राम" को सभी मंत्रों का सार क्यों कहा जाता है

06 गलतियां स्वीकार दें भविष्य को निखार

08 जमीन दालों का जाल: सरकारी जमीन पर खुला खेल

भारतीय तिपहिया चालक संघ रजि द्वारा सतर्कता विभाग को पत्र के माध्यम से परिवहन विभाग की ऑटो-टैक्सी यूनिट में व्यापक भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी एवं ऑटो रिक्शा ट्रेडिंग की गंभीर शिकायत कर विभागीय जांच एवं कठोर कार्रवाई हेतु आग्रह किया



सोबरन सिंह

संस्था के महासचिव ने परिवहन विभाग, दिल्ली सरकार की ऑटो-टैक्सी यूनिट में लंबे समय से खुल्लम-खुल्ला लाखों रुपये की रिश्वत का लेन-देन, ऑटो रिक्शा की अवैध ट्रेडिंग तथा संगठित भ्रष्टाचार के लिए, जिसकी जानकारी एवं प्रमाण ट्रेड यूनियन के संज्ञान में आए हैं के प्रति लिखा।
पत्र में कहा कि यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि आम ऑटो रिक्शा चालकों एवं वाहन मालिकों से संबंधित दस्तावेजी कार्य (जैसे ट्रांसफर, परमिट, फिटनेस, अन्य प्रक्रियाएं) को लेकर मोटर व्हीकल इंस्पेक्टर (MVI) द्वारा अमानवीय, तानाशाही एवं पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाया जा रहा है।
चालकों पर अनावश्यक दबाव बनाया जाता है

तथा उन्हें मजबूर किया जाता है कि वे अपने कार्य तथाकथित "पसंदीदा व्यक्तियों/मध्यस्थों" के माध्यम से कराएं।
अत्यंत गंभीर तथ्य यह है कि पिछले तीन दिनों के भीतर लगभग 400-500 ऑटो रिक्शा का ट्रांसफर चुनिंदा व्यक्तियों के पक्ष में कर दिया गया है, जबकि ऑटो-टैक्सी यूनिट में पिछले लगभग एक वर्ष से हजारों वाहनों की वैध फीस एवं आवेदन लंबित पड़े हैं, जिन पर कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है।
यह स्थिति स्पष्ट रूप से भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी एवं पद के दुरुपयोग की ओर संकेत करती है।
उक्त गतिविधियों से यह संदेह और गहरा होता है कि विभाग के कुछ अधिकारी/कर्मचारी सामाजिक

एवं आपराधिक तत्वों से मिलीभगत कर आम चालकों के अधिकारों का हनन कर रहे हैं, जिससे न केवल विभाग की छवि धूमिल हो रही है, बल्कि सरकार की पारदर्शिता नीति पर भी प्रश्नचिह्न लगा रहा है।
* अतः आपसे विनम्र किंतु दृढ़ निवेदन है कि- ऑटो-टैक्सी यूनिट में हुए हालिया 400-500 ऑटो रिक्शा ट्रांसफर मामलों की निष्पक्ष एवं उच्चस्तरीय जांच कराई जाए।
* पिछले एक वर्ष से लंबित आवेदनों एवं फीस की स्थिति की विस्तृत जांच कराई जाए।
* रिश्वत, अवैध ट्रेडिंग एवं पक्षपात में लिप्त दोषी अधिकारियों/कर्मचारियों की पहचान कर उनके विरुद्ध सख्त विभागीय एवं

दंडात्मक कार्रवाई की जाए।
* भविष्य में ऐसी भ्रष्ट गतिविधियों की पुनरावृत्ति रोकने हेतु पारदर्शी, जवाबदेह एवं समयबद्ध व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए परिवहन आयुक्त को कहा जाए।
* ट्रेड यूनियन द्वारा उपलब्ध कराए गए प्रमाण एवं तथ्यों को इस शिकायत के साथ संलग्न/प्रस्तुत किया जाएगा।
हमें पूर्ण विश्वास है कि विभागीय सतर्कता आयोग इस गंभीर मामले को प्राथमिकता देते हुए त्वरित एवं निष्पक्ष कार्रवाई करेगा, जिससे आम ऑटो चालकों को न्याय मिल सके और भ्रष्टाचार पर प्रभावी अंकुश लगाया जा सके।
महासचिव भारतीय तिपहिया चालक संघ

जय जगन्नाथ जी

जगन्नाथ पुरी धाम दर्शन यात्रा

(दिल्ली से फ्लाइट द्वारा यात्रा)

यात्रा तिथि: 19 जनवरी से 21 जनवरी

यात्रा कार्यक्रम:

DAY 1 - दिल्ली भुवनेश्वर (फ्लाइट द्वारा)
होटल में चेक-इन
खंडगिरी एवं उदयगिरी गुफाएं
एलिफंटा / लायन / क्वीन क्लस
लिंगराज मंदिर
जैन मंदिर
भुवनेश्वर मंदिर
बिंदुसागर
रात्रि विश्राम - भुवनेश्वर

रामचंडी मंदिर
पुरी होटल में ठहराव
श्री जगन्नाथ मंदिर दर्शन
विमला शक्तिपीठ
रात्रि विश्राम - पुरी

DAY 3
नाशता
चिल्का झील (ऑलिम्पिक सैक्चरी)
दिल्ली वापसी

पैकेज में शामिल:

हवाई यात्रा
होटल ठहराव
केवल नाश्ता

DAY 2
नाश्ता
बुद्ध स्तूप
कोणार्क सूर्य मंदिर
चंद्रभागा बीच

पैकेज मूल्य: 25,000/-
प्रति व्यक्ति

बुकिंग अंतिम तिथि:
15 दिसंबर

संपर्क करें:

9716338127,
9811732094
9212632095



द्वारका कोर्ट की शानदार जीत!



अभिषेक राजपूत

श्रीमती महेन्द्र कौर मेमोरियल टूर्नामेंट में आज के मैत्रीपूर्ण क्रिकेट मैच में द्वारका कोर्ट एडवोकेट्स टीम ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए सुप्रीम कोर्ट कोर्ट एडवोकेट्स टीम को हराया!
टीम का नेतृत्व एडवोकेट विकासदीप शर्मा और आदित्य

चौधरी ने किया, जिन्होंने उत्कृष्ट कप्तानी और टीम स्पिरिट का परिचय दिया।
खिलाड़ियों ने दमदार बल्लेबाजी, शानदार गेंदबाजी और बेहतरीन फील्डिंग के बल पर यह जीत हासिल की। यह सिर्फ एक मैच नहीं, बल्कि टीमवर्क, उत्साह और खेल भावना का मिसाल रहा।
द्वारका कोर्ट के समस्त टीम को हार्दिक बधाई और एडवोकेट विकासदीप शर्मा को सलाम उनकी प्रेरणादायक मोटिवेशन के लिए!
द्वारका कोर्ट की टीम द्वारका वॉरियर्स को बनाने के लिए श्री बलबीर सिंह जाखड़ पूर्व प्रधान द्वारका जिला न्यायालय का विशेष सहयोग रहा है।

पहली खाद्यान्न मालगाड़ी कश्मीर पहुंची

पिकी कुंडू

भारतीय खाद्य निगम (FCI) की पंजाब से चलने वाली पहली खाद्यान्न मालगाड़ी दक्षिण कश्मीर के नव-विकसित अनंतनाग गुड्स टर्मिनस पहुंची। रेलवे अधिकारियों के अनुसार, यह कदम कश्मीर घाटी में आपूर्ति और लॉजिस्टिक्स नेटवर्क को मजबूत करने की दिशा में एक अहम उपलब्धि है। एफसीआई की यह मालगाड़ी हाल ही में फिरोजपुर मंडल के अजीतवाल रेलवे स्टेशन से जम्मू मंडल के अंतर्गत आने वाले अनंतनाग गुड्स टर्मिनल के लिए खाना की गई है जो 21 दिसंबर को अपने गंतव्य पर पहुंचेगी। अधिकारियों ने बताया कि ट्रेन में 21 बीसीएन वैगनों के जरिए करीब 1,384 टन खाद्यान्न लाया जा रहा है।
दक्षिण कश्मीर का अनंतनाग गुड्स टर्मिनल, जो उत्तरी रेलवे के जम्मू मंडल के अंतर्गत आता है, का उद्घाटन 9 अगस्त को किया गया था। यह कश्मीर को देश के राष्ट्रीय माल परिवहन नेटवर्क से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा रही है। इस गुड्स टर्मिनल के शुरूआती



चरण में, सबसे पहले पंजाब के रूपनगर से अनंतनाग तक 21 बीसीएन सीमेंट रिक का परिवहन किया गया था। इसके बाद विभिन्न प्रकार के माल, औद्योगिक उत्पादन, कच्चा माल, कारों और अन्य मिश्रित वस्तुओं का आवागमन अनंतनाग गुड्स टर्मिनल और अन्य रेलवे मंडलों

के बीच किया गया।

रेलवे अधिकारियों ने बताया कि खाद्यान्न की इस पहली मालगाड़ी से घाटी के दूरदराज इलाकों में खाद्यान्न की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित होगी। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, उचित सिंचन ने कहा रेल मार्ग से खाद्यान्न का परिवहन सस्ता और

तेज होगा, जिससे सीधे तौर पर किसानों और उपभोक्ताओं दोनों को लाभ मिलेगा। इससे स्थानीय बाजारों को बढ़ावा मिलेगा, रोजगार के अवसर पैदा होंगे और कृषि अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। उन्होंने कहा कि एफसीआई रेलमार्ग के माध्यम से खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और बफर स्टॉक का प्रभावी प्रबंधन करने के लिए प्रतिबद्ध है, जिससे आम जनता को लाभ पहुंचेगा।
इसे एक और ऐतिहासिक उपलब्धि बताते हुए कहा यह कश्मीर की खाद्यान्न आवश्यकताओं को पूरा करने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा और क्षेत्र को खाद्य आत्मनिर्भर बनाने की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है।
यह रेलवे के आधुनिकीकरण और घाटी के विकास के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने यह भी बताया कि भविष्य में एफसीआई और रेलवे इस सेवा का विस्तार करने और कश्मीर के अन्य हिस्सों के लिए भी ऐसी और रेलगाड़ियां चलाने की योजना बना रहे हैं, जिससे पूरे क्षेत्र में लॉजिस्टिक्स और सप्लाय चैन में क्रांतिकारी बदलाव आएगा।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com



पिकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार, त्योहारी सीजन अलर्ट

साइबर अपराधी ऑनलाइन शॉपिंग, ट्रेवल बुकिंग और इवेंट्स के दौरान नए और अधिक धोखेबाज तरीकों का इस्तेमाल कर रहे हैं।
फाइव-स्टार रेटिंग रिव्यू फ्रॉड मोडस ऑपरेंडी और सुरक्षा उपाय मोडस ऑपरेंडी

1. फर्जी विक्रेता, अज्ञात ब्रांड सस्ते उत्पाद, कोई वारंटी नहीं, कोई सपोर्ट नहीं।
2. फर्जी 5-स्टार रिव्यू की बाढ़ बाट्स, पेड रिव्यूअर, कॉपी-पेस्ट तारीफ, एआई इमोजन-झूठा भरोसा बनाने के लिए।
3. रिव्यू हाईजैकिंग धोखेबाज असली पुराने रिव्यू को मिलाकर हजारों पॉजिटिव दिखाते हैं।
4. भ्रामक फोटो और दावे चोरी की गई तस्वीरें, बढ़ा-चढ़ाकर बताए गए स्पेसिफिकेशन, नकली सुरक्षा



1. प्रमाणपत्र। डिलीवर किया गया उत्पाद असुरक्षित या घटिया गुणवत्ता का होता है।
2. विक्रेता प्रोफाइल जांचें- विक्रेता की रेटिंग, इतिहास और लंबे समय से सक्रियता देखें। नए या बिना इतिहास वाले विक्रेताओं से बचें।
3. पहले नकारात्मक रिव्यू पढ़ें- 1-2 स्टार रिव्यू और असली फोटो अक्सर सचवाई बताते हैं।
4. ब्रांड की पुष्टि करें- ऑफिशियल वेबसाइट, कस्टमर सपोर्ट और सोशल मीडिया उपस्थिति खोजें।
5. कीमतों की तुलना करें- अगर ऑफर बहुत अच्छा लग रहा है, तो अक्सर वह धोखा होता है।
6. इलेक्ट्रॉनिक्स में भरोसेमंद ब्रांड चुनें- एयर फ्रायर, हीटर, चार्जर, पावर बैंक जैसे उपकरणों के लिए यह बेहद जरूरी है।
7. संदिग्ध लिस्टिंग की रिपोर्ट करें- फर्जी रिव्यू, असुरक्षित उत्पाद और धोखेबाज विक्रेताओं को प्लेटफॉर्म और साइबरक्राइम पोर्टल पर प्रलेग करें।
याद रखें धोखेबाज हमारी 5-स्टार रेटिंग पर भरोसे का फायदा उठाते हैं।
एक पल की जाँच आपको महंगे-और खतरनाक-नुकसान से बचा सकती है।

ठंड में हीटर या ब्लोअर चलाएं मगर सावधानी से

पिकी कुंडू

सर्दियों के मौसम में जैसे-जैसे तापमान गिरता जाता है, देरी-देरी से ठंड से बचने के लिए हीटर या ब्लोअर चलाए जा सकते हैं। एसे में ठंड से बचने के लिए लोग ज्यादा से ज्यादा गर्म कपड़े पहनकर खुद को ठंड से बचाने की कोशिश करते हैं। वहीं कुछ लोगों का काम इनके घर से नहीं बचाना और उन्हें ब्लोअर और हीटर का इस्तेमाल करना पड़ता है।
हीटर या ब्लोअर के सामने आते ही आराम तो मिल जाता है लेकिन वे संकेत और रिस्क के लिए नुकसानदायक साबित हो सकते हैं।
हीटर या ब्लोअर का इस्तेमाल करते वक्त इन बातों का ध्यान रखें
1. हीटर के पास कोई भी जलने वाला सामान जैसे कालत्र, ब्लैकट या तकड़ी वगैरह न रखें।
2. हीटर ऐसी जगह न रखें जहां से ज्यादा आना-जाना हो। खास ध्यान रखें कि यह छोटे बच्चों की पहुंच से दूर रहे। इसे किनारे



किसी सख्त सतह पर रखें।
3. हीटर को बीच-बीच में बंद करके ठंडे और कमरा भी खोलें।
अगर हीटर के पास नहीं बैठें ह तो इसे बंद कर दें। कमरा बंद

करके हीटर ऑन करके न जाए वहां कार्बन मोनोऑक्साइड काफ़ी नुकसान पहुंचा सकती है। बिस्तर पर जाते वक्त भी हीटर जलाकर न सोएं, दम घूटने से जान तक जा सकती है।
4. फ़िन लोडों को सॉफ्ट, सांस या खासी जैसे समस्या है उन्हें एयर ब्लोअर इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। बेहतर सेना कि ब्लोअर के सामने एक बर्तन में थोड़ा नुनगुना पानी रखें ताकि ब्लोअर की जल से बचा शुक न हो।
5. हीटर चलाई के लिए भी ठीक नहीं लोते। हीटर के सामने ज्यादा देर तक बैठने से रिस्क में स्वास्थ्य आ जाता है और इसमें खुलती भी हो सकती है। इसके अलावा हीटर से आंखें भी झड़ें हो जाती है और इनमें जलन हो सकती है।
6. अगर हीटर या ब्लोअर में बैटन या बल्बूरी से तो नुनगुना पानी पीते रहें। इसके अलावा गरम गरम सूप भी पीते रहें। रिस्क में नौइंशरआइर इस्तेमाल करते रहें।

संतरे के छिलकों के उपयोग, सुरक्षित और लाभकारी

पिकी कुंडू

1. कम्पोस्ट बनाकर
- * छिलकों को छोटे टुकड़ों में काटें।
- * गोबर खाद / वर्मीकम्पोस्ट / सूखी पत्तियों के साथ मिलाएँ।
- * 30-45 दिन में बेहतरीन खाद।
- * मिट्टी हल्की होती है।
- * पोषक तत्व बढ़ते हैं।
2. सूखाकर पाउडर बनाना
- * छिलकों को धूप में पूरी तरह सुखाएँ।
- * पीसकर पाउडर बनाएँ।
- * 1-2 चम्मच प्रति गमला मिट्टी में मिलाएँ।
- * धीरे-धीरे पोषण देता है।



* फंगल ग्रोथ कम होती है।
3. कीट-रोधी उपयोग
* छिलकों को पानी में भिगोकर 24 घंटे रखें।
* छानकर मिट्टी में डालें।
* चींटियाँ, मच्छर, कुछ कीट दूर रहते हैं।
4. कब सीधे डाल सकते हैं? केवल तब,

जब- बहुत कम मात्रा हो।
5. सीधे डालना क्यों गलत है?
* बहुत अम्लीय (acidic) होते हैं।
* सड़ते समय गर्मी और गैस पैदा करते हैं।
* जड़ों को नुकसान पहुंचा सकते हैं।
* कीड़े और फंगस बढ़ा सकते हैं।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

नाभी कुदरत की एक अद्भुत देन है

पिकी कुंडू



एक 62 वर्ष के बुजुर्ग को अचानक बाईं आँख से कम दिखना शुरू हो गया। खासकर रात को नजर न के बराबर होने लगी। जाँच करने से यह निष्कर्ष निकला कि उनकी आँखों की रक्त नलीयों सूख रही हैं। रिपोर्ट में यह सामने आया कि अब वो जीवन भर देख नहीं पायेंगे।... मित्रों यह सम्भव नहीं है.. मित्रों हमारा शरीर परमात्मा की अद्भुत देन है... गर्भ की उत्पत्ति नाभी के पीछे होती है और उसको माता के साथ जुड़ी हुई नाडी से पोषण मिलता है और इसलिए मृत्यु के तीन घंटे तक नाभी गर्म रहती है।

गर्भधारण के नौ महीनों अर्थात् 270 दिन बाद एक सम्पूर्ण बाल स्वरूप बनता है। नाभी के द्वारा सभी नसों का जुड़ाव गर्भ के साथ होता है। इसलिए नाभी एक अद्भुत भाग है। नाभी के पीछे की ओर पंचूटी या

navel button होता है जिसमें 72000 से भी अधिक रक्त धमनियाँ स्थित होती हैं।

नाभी में गाय का शुद्ध घी या तेल लगाने से बहुत सारी शारीरिक दुर्बलता का उपाय हो सकता है।

1. आँखों का शुष्क हो जाना, नजर

कमजोर हो जाना, चमकदार त्वचा और बालों के लिये उपाय... सोने से पहले 3 से 7 बूँद शुद्ध घी और नारियल के तेल नाभी में डालें और नाभी के आसपास डेढ़ इंच गोलाई में फैला दें।

नाभी में डालें और उसके आसपास डेढ़ इंच में फैला दें।

3. शरीर में कमपन्न तथा जोड़ों में दर्द और शुष्क त्वचा के लिए उपाय:- रात को सोने से पहले तीन से सात बूँद राई या सरसों के तेल नाभी में डालें और उसके चारों ओर डेढ़ इंच में फैला दें।

4. मुँह और गाल पर होने वाले फिम्ल के लिए उपाय:- नीम का तेल तीन से सात बूँद नाभी में उपरोक्त तरीके से डालें।

नाभी में तेल डालने का कारण हमारी नाभी को मालूम रहता है कि हमारी कौनसी रक्तवाहिनियाँ सूख रही हैं, इसलिए वो उसी धमनी में तेल का प्रवाह कर देती है।

जब बालक छोटा होता है और उसका पेट दुखता है तब हम हिंग और पानी या तैल का मिश्रण उसके पेट और नाभी के आसपास लगाते थे और उसका दर्द तुरंत गायब हो जाता था। इसी काम है तेल का।

आज की अधिकांश पाचन समस्याएँ भोजन की कमी से नहीं, भोजन की समझ के अभाव से जन्म लेती हैं

पिकी कुंडू

आयुर्वेद हमें यह सिखाता है कि हमें आहार अपने-आप में शुद्ध हो सकता है, परंतु गलत संयोजन में लिया गया भोजन शरीर के लिए भार बन जाता है।

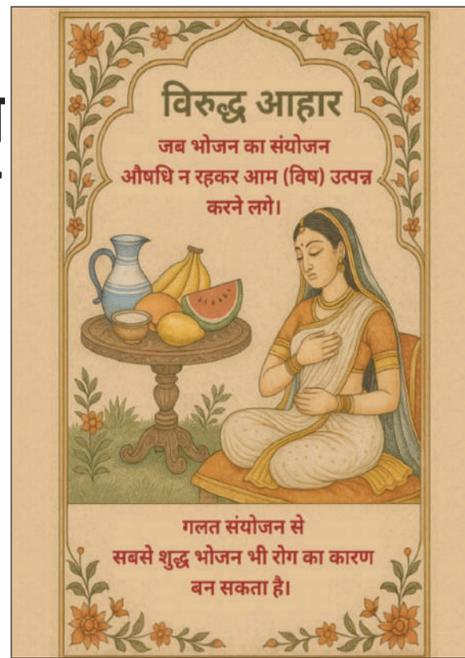
दूध, दही, फल, शहद या अनाज * प्रत्येक का अपना स्वभाव, * अपनी पाचन-गति और * अग्नि पर अपना प्रभाव होता है।

जब इनका मेल प्रकृति के विरुद्ध होता है,

तब वही आहार धीरे-धीरे आम उत्पन्न करता है। यह संयोजन मनाही की सूची नहीं है, यह समझ का निमंत्रण है कि हम भोजन को केवल स्वाद से नहीं, उसके संयोजन और समय से आँके।

स्वास्थ्य का वास्तविक मार्ग दवाओं से नहीं, अनुशासित आहार-बुद्धि से निकलता है।

भोजन को सरल रखिए, संयोजन को समझिए और शरीर को वह सम्मान दीजिए जिसका वह अधिकारी है।



गलत संयोजन से सबसे शुद्ध भोजन भी रोग का कारण बन सकता है।

आगरा का फेमस अंगूरी पेठा रेसिपी

सामग्री (Ingredients) पेठा के लिए
* पेठा (कुम्हड़ा) - 1 किलो
* चूना (फूड ग्रेड लाइम) - 1 बड़ा चम्मच
* पानी - 2-3 लीटर
* शक्कर - 700-800 ग्राम
* केसर - 10-12 धागे (वैकल्पिक, रंग और खुशबू के लिए)
* इलायची पाउडर - 1/2 छोटा चम्मच
* केवड़ा/रोज वाटर - 1/2 छोटा चम्मच (वैकल्पिक)

बनाने की विधि (Method)

1. कुम्हड़ा तैयार करना

1. कुम्हड़े को छीलकर बीच के बीज और रेशे निकाल दें।

2. इसे छोटे-छोटे अंगूर के आकार (लगभग 1 इंच) के टुकड़ों में काटें।

3. सभी टुकड़ों पर हल्के चाकू से 1-2 कट लगा दें ताकि चाशनी अच्छी तरह अंदर जाए।

2. चूने के पानी में भिगोना

1. एक बड़े बर्तन में 2 लीटर पानी में 1 बड़ा चम्मच चूना घोलें।

2. इस पानी को 20 मिनट बैठने दें ताकि चूना नीचे बैठ जाए।

3. ऊपर का साफ पानी धीरे से छानकर लें (नीचे का चूना फेंक दें)।

4. कुम्हड़े के टुकड़ों को इस साफ चूने के पानी में 2 घंटे भिगो दें।

इससे टुकड़े क्रिस्पी और काँच जैसे पारदर्शी बनते हैं।

3 उबालना

1. 2 घंटे बाद टुकड़ों को साफ पानी से 2-3 बार धो लें।

2. अब इन्हें उबलते पानी में डालें और 10-12 मिनट उबालें।

3. जब टुकड़ा उंगली से दबाने पर हल्का नरम



लगे पर टूटें नहीं - तब गैस बंद कर दें।

4. पानी छानकर अलग रखें।

4. चाशनी बनाना

1. एक पैन में शक्कर और 1 कप पानी डालें।

2. गैस ऑन कर शक्कर घुलने दें।

3. 1-2 तार की चाशनी तैयार करें।

4. केसर के धागे, इलायची पाउडर और रोज वाटर/केवड़ा डाल दें।

5. पेठा पकाना

1. उबले हुए कुम्हड़े के टुकड़े चाशनी में डालें।

2. धीमी आँच पर 20-25 मिनट पकाएँ।

3. जब टुकड़े चाशनी को अच्छी तरह सोखकर काँच जैसे चमकदार हो जाएँ तब गैस बंद कर दें।

4. इन्हें चाशनी में ही 2-3 घंटे छोड़ दें ताकि अच्छे से सेट हो जाएँ।

6. सेट करना

* पेठा निकालकर जाली या प्लेट पर फैला दें।

* 2-3 घंटे हवा में सूखने दें।

* आपका अंगूरी पेठा तैयार है!

स्टोर कैसे करें?

* एयरटाइट बॉक्स में भरकर 10-15 दिन तक फ्रिज में आराम से चलता है।

सत्यानाशी (वैज्ञानिक नाम: Argemone mexicana), जिसे स्वर्णक्षीरी, पीला धतूरा या कटीली पोस्ता भी कहा जाता है

आयुर्वेद में एक अत्यंत गुणकारी औषधि माना गया है। यह पौधा अक्सर बंजर भूमि या सड़क के किनारे उगा हुआ मिलता है और अपनी कटिदार पत्तियों और सुंदर पीले फूलों के लिए पहचाना जाता है। इसके नाम का अर्थ है— "रोगों का सत्यानाश करने वाला"।

सत्यानाशी के प्रमुख औषधीय लाभ इस पौधे के विभिन्न भाग (जड़, पत्ते, दूध और बीज) अलग-अलग समस्याओं में रामबाण का काम करते हैं।

* त्वचा रोगों के लिए (Skin Health): सत्यानाशी का सबसे प्रसिद्ध उपयोग दाद, खाज, खुजली और सोरायसिस जैसे चर्म रोगों में होता है। इसके डंटल को तोड़ने पर जो पीला दूध निकलता है, उसे प्रभावित स्थान पर लगाने से संक्रमण ठीक होता है।

* अस्थमा और श्वसन संबंधी समस्या: इसकी जड़ का काढ़ा या पाउडर अस्थमा (दमा) और पुरानी खाँसी में राहत देता है। यह फेफड़ों में जमा कफ को बाहर निकालने में मदद करता है।

* यौन स्वास्थ्य (Sexual Health): आयुर्वेद में इसे पुरुषों की शारीरिक कमजोरी और नपुंसकता दूर करने के लिए विशेष माना गया है।

इसकी जड़ का उपयोग धातु रोगों के उपचार में किया जाता है।

* किडनी और मूत्र विकार: सत्यानाशी किडनी की सूजन और मूत्र मार्ग के संक्रमण (UTI) को ठीक करने में सहायक है। यह पेशाब रकने की समस्या में भी लाभकारी माना जाता है।

* आँखों की समस्याओं में: इसके दूध को गुलाब जल में मिलाकर इस्तेमाल करने से आँखों की सूजन और धुंधलापन दूर होता है। (नोट: इसे बिना विशेषज्ञ की सलाह के आँखों में न डालें)।

* घाव भरने में: इसके पत्तों का रस या तेल पुराने घावों को जल्दी भरने और संक्रमण से बचाने में प्रभावी होता है।

उपयोग के विभिन्न तरीके (भागों के अनुसार)

पौधे का भाग- उपयोग का तरीका- लाभ

पीला दूध- बाहरी लेप के रूप में- दाद, खुजली और घाव

जड़- काढ़ा या चूर्ण- अस्थमा, खाँसी और कमजोरी

पत्ते- रस के रूप में- मलेरिया और अल्सर

बीज- तेल के रूप में- कब्ज और चर्मरोग

सावधानियाँ और चेतावनी



सत्यानाशी जितना गुणकारी है, उतना ही सतर्क रहने की भी जरूरत है:

* जहरीले बीज: इसके बीज जहरीले होते हैं और सरसों के बीज जैसे दिखते हैं। अगर इन्हें खाने के तेल (सरसों के तेल) में मिला दिया जाए, तो यह 'ड्रॉप्सी' (Dropsy) नामक गंभीर बीमारी का कारण बन सकता है।

* गर्भावस्था: गर्भवती महिलाओं और छोटे बच्चों को इसका सेवन बिल्कुल नहीं करना चाहिए।

* विशेषज्ञ की सलाह: इसकी मात्रा बहुत महत्वपूर्ण होती है, इसलिए किसी भी रूप में इसे खाने से पहले आयुर्वेदिक डॉक्टर से सलाह जरूर लें।

प्याज़ की कचौरी रेसिपी

सामग्री, कचौरी के आटे के लिए:

* मैदा - 300 ग्राम
* तेल या घी - 60 ml
* पानी - 80 ml (आवश्यकतानुसार)

* नमक - स्वादानुसार
सामग्री, स्टरफिंग (भरावन) के लिए:

* अजवाइन - 1 छोटा चम्मच
* बेसन - 50 ग्राम
* प्याज़ - 3 (बारीक कटे हुए)

* अदरक - 1 छोटा चम्मच (बारीक कटा)
* हरी मिर्च - 1 छोटा चम्मच (बारीक कटी)
* तेल - 2 बड़े चम्मच
* लाल मिर्च पाउडर - 1 छोटा चम्मच

* हल्दी पाउडर - छोटा चम्मच
* गरम मसाला - छोटा चम्मच
* धनिया पाउडर - 1 छोटा चम्मच
* जीरा पाउडर - छोटा चम्मच
* कसूरी मेथी - छोटा चम्मच
* नमक - स्वादानुसार

विधि

1 आटा तैयार करें

1. एक बड़े बर्तन में मैदा और नमक डालें।

2. इसमें तेल/घी डालकर अच्छी तरह मिस्र करें ताकि मोयन बन जाए।

3. थोड़ा-थोड़ा पानी डालकर सख्त आटा गुंथ लें।

4. आटे को ढक्कर 20 मिनट के लिए रख दें।

2 स्टरफिंग बनाएं

1. कढ़ाही में 2 बड़े चम्मच तेल गरम करें।

2. अजवाइन डालें और हल्का सा भूनें।

3. अब बेसन डालकर धीमी आँच पर खुशबू आने तक भूनें।

4. इसमें कटे प्याज़, अदरक और हरी मिर्च डालकर 2-3 मिनट भूनें।

5. अब सभी मसाले - लाल मिर्च, हल्दी, धनिया पाउडर, जीरा पाउडर, गरम मसाला, कसूरी मेथी और नमक डालें।

6. अच्छे से मिलाकर गैस बंद कर दें और मिश्रण ठंडा होने दें।

3 कचौरी बनाएं

1. आटे की छोटी-छोटी लोइयाँ बना लें।

2. एक लोई को हल्का सा बेलें, बीच में स्टरफिंग रखें।

3. किनारे बंद करके हल्का सा दबाएँ (ज्यादा न बेलें)।

4 तलना

1. कढ़ाही में तेल गरम करें (मध्यम आंच)।

2. कचौरीयाँ डालें और धीमी-मध्यम आंच पर सुनहरी और कुरकुरी होने तक तलें।

3. टिश्यू पेपर पर निकाल लें।

परोंसने का तरीका गरमागरम प्याज़ की कचौरी को हरी चटनी, मीठी चटनी या आलू की सब्जी के साथ परोसें।



सामग्री

मैदा, तेल, पानी/नमक, तेल, अजवाइन, बेसन, प्याज़, अदरक, हरी मिर्च, लाल मिर्च, हल्दी, गरम मसाला, धनिया पाउडर, कसूरी मेथी

पाव भाजी रेसिपी, (मुम्बई स्टाइल)

सामग्री:

* आलू: 3 उबले हुए और मैश किए हुए
* फूलगोभी: 1 कप बारीक कटी
* हरी मटर: कप
* शिमला मिर्च: कप कटी हुई

* प्याज़: 1 कटा हुआ
* टमाटर: 2 कटे हुए
* अदरक-लहसुन पेस्ट: 1 बड़ा चम्मच

* पाव भाजी मसाला: 2 छोटे चम्मच
* लाल मिर्च पाउडर: 1 छोटा चम्मच
* मक्खन: 3-4 बड़े चम्मच
* नींबू, हरा धनिया, नमक - स्वाद अनुसार

विधि:

1. सब्जियाँ उबालें

2. फूलगोभी और मटर को उबाल लें।

3. भाजी तैयार करना

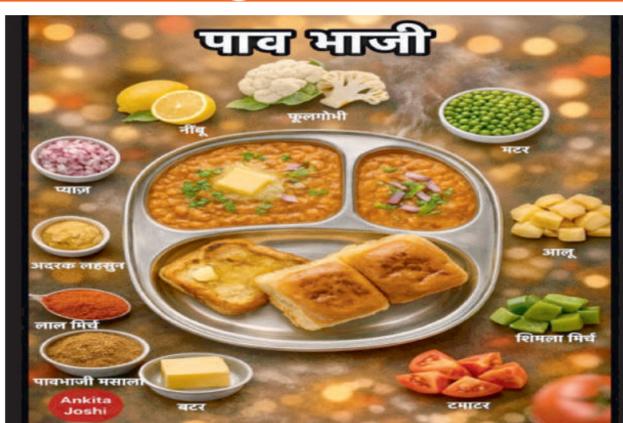
1. एक पैन में मक्खन गरम करें।

2. प्याज़ डालकर सुनहरा होने तक भूनें।

3. अदरक-लहसुन पेस्ट डालकर भूनें।

4. अब टमाटर डालें और नरम होने तक पकाएँ।

5. इसमें उबले आलू, शिमला मिर्च और उबली



सर्वजियाँ डालें।

6. लाल मिर्च पाउडर, पाव भाजी मसाला और नमक मिलाएँ।

7. सब कुछ अच्छे से मैश करें।

8. आवश्यकता अनुसार पानी डालें और 10

मिनट धीमी आँच पर पकाएँ।

पाव सेंकना तवा गरम करें, मक्खन डालें और पाव को दोनों तरफ से कुरकुरा सेंक लें।

सर्व करे गरमागरम पाव भाजी को मक्खन, हरा धनिया और नींबू के साथ परोसें।

सर्दियों के स्पेशल गोंद के लड्डू

सामग्री (Ingredients)

* खाने वाला गोंद - कप
* देशी घी - 1 कप
* गेहूँ का आटा - 1 कप
* बेसन - 1 कप

* नारियल का बुरादा - कप
* गुड़ (पिसा हुआ) - 1 कप
* मखाना - 1 कप
* बादाम - कप (कटे हुए)

* काजू - कप (कटे हुए)
* कद्दू के बीज - कप
* इलायची पाउडर - 1 छोटा चम्मच

* सौंफ पाउडर - 1 छोटा चम्मच

बनाने की विधि (Step by Step)

1 गोंद तैयार करें कढ़ाही में 3-4 टेबलस्पून घी गरम करें। गोंद डालें और धीमी आँच पर फूलने तक तलें। ठंडा होने पर हाथ से या मिक्सी में दरदरा कूट लें।

2 मखाने भूनें उसी कढ़ाही में थोड़ा घी डालकर मखाने कुरकुरे होने तक भूनें। ठंडे करके दरदरे पीस



कढ़ाही में बचा हुआ सारा घी डालें।

पहले गेहूँ का आटा डालकर खुशबू आने तक भूनें। फिर बेसन डालें और धीमी आँच पर सुनहरा होने तक भूनें।

3. ड्राई फ्रूट्स भूनें बादाम, काजू और कद्दू के बीज हल्के से भूने लें। दरदरा काटकर अलग रखें।

4 आटा और बेसन भूनना अब

5 नारियल + मसाले अब नारियल का बुरादा डालें। इलायची पाउडर और सौंफ पाउडर मिलाएँ। अच्छी तरह मिस्र करें।

6 सब कुछ मिलाएँ अब मखाना हुआ गोंद, मखाना और ड्राई फ्रूट्स डालें। आँच बंद कर दें।

7 गुड़ मिलाएँ मिश्रण हल्का गरम रहना चाहिए। अब पिसा हुआ गुड़ डालकर अच्छी तरह मिलाएँ।

8 लड्डू बनाएँ हाथों में थोड़ा घी लगाकर गर्म मिश्रण से लड्डू बाँध लें। स्टोरेज टिप एयरटाइट डिब्बे में रखें, 20-25 दिन तक खराब नहीं होते।

फायदे

1. सर्दियों में शरीर को गर्म रखता है

2. कमजोरी और जोड़ों के दर्द में फायदेमंद

3. दिलीवरी के बाद महिलाओं के लिए बहुत लाभकारी

देशी स्वाद, देशी ताकत, एक लड्डू रोज - सेहत भरपूर!

धर्म अध्यात्म



बुध ग्रह केवल एक खगोलीय ग्रह नहीं बल्कि सनातन ज्योतिष में एक जीवंत, चेतन शक्ति माना जाता है।



पिंकी कुंडू

बुद्धि, वाणी, व्यापार, चातुर्य और तेज निर्णय क्षमता का मूल बीज यही है। पुराणों में इसे भगवान विष्णु का अंशावतार बताया गया है, इसलिए इसमें सौम्यता और संतुलन की ऊर्जा प्रवाहित होती रहती है। आकाश में इसे तेज गति से चलते हुए देखा जा सकता है, इसलिए इसे देवताओं का संदेशवाहक भी कहा गया है।

बुध का वास्तविक कार्य मनुष्य के भीतर मौजूद विचार-शक्ति को तेज करना है। जो लोग तेज सीखते हैं, साफ बोलते हैं, व्यापार में निपुण होते हैं, गणना में तेज होते हैं, उनका अधिपति बुध ही माना जाता है। यही ग्रह शरीर में तंत्रिकाओं की सक्रियता, स्मरणशक्ति और संवाद क्षमता को नियंत्रित करता है।

कुंडली में बुध का स्थान जितना मजबूत होता है, व्यक्ति उतना ही चतुर, व्यावहारिक और सफल होता है। कमजोर होने पर भ्रम, अस्थिरता, गलत निर्णय और संवाद में बाधा दिखती है। वाणी की शक्ति, लेखन कला, सोईबाजी की क्षमता और व्यापारिक भाग्य—ये सब बुध के प्रभाव से ही खिलते हैं।

हरा रंग बुध का प्रतिनिधि इसलिए माना जाता है क्योंकि यह रंग शीतल, हल्का और मन-मस्तिष्क को संतुलित करने वाला है। यह प्रकृति की ताजगी, बुद्धि की शुद्धता और विचारों की हरियाली का प्रतीक है। हरा रंग मन की उलझनें खोलकर विचारों को स्पष्ट करता है, इसलिए बुध से इसकी ऊर्जा जुड़ी मानी जाती है।

बुध ग्रह को शांत, संतुलित और प्रबल बनाने के लिए सबसे प्रभावी और प्रचलित मंत्र यह माने जाते हैं:

बुधबीज मंत्र
ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

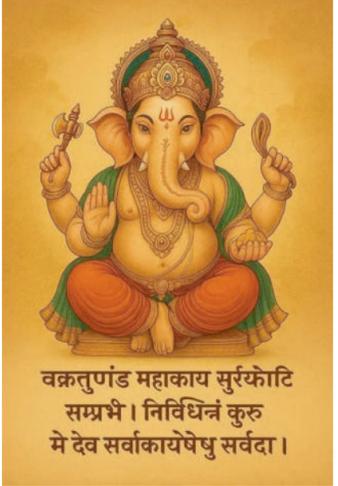
बुधग्रह मंत्र
ॐ बुधाय नमः

बुध स्तुति मंत्र (ज्योतिष में अत्यंत प्रभावी)
प्रियंगुकलिकाशयाम् रूपेणाप्रतिमं बुधम्-
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्-



ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

आत्म-दर्शन के भाव, विवेक, कर्म और चिंता का गणेश-मार्ग



वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभे । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।

पिंकी कुंडू
जौदन की आध्यात्मिक यात्रा किसी दूरस्थ लोक की ओर नहीं, बल्कि अपने ही अंतःकरण की गहराइयों की ओर होती है।
मनुष्य प्रायः अपने दुःख-सुख, बाधा-किञ्च और चिंताओं के लिए बाहरी परिस्थितियों को उत्तरदायी ठहराता है, पर आत्म-दर्शन यह सिखाता है कि जीवन में घटने वाली प्रत्येक घटना हमारी ही चेतना, हमारे ही कर्म और हमारी ही दृष्टि का प्रतिबिम्ब होती है।
ब्रह्मचर्य का दिन
जो बुद्धि, विवेक और जागरूकता का प्रतीक है उसे भगवान गणेश की ओर अर्पण करता है।
वे केवल दिव्यदर्शी ही नहीं, अंतर्बोध के प्रथम गुरु हैं। उनका दर्शन यह सिखाता है कि कर्म की जिम्मेदारी स्वीकार करना और मन की ऊर्जा को सही दिशा देना ही आत्मबोध का वास्तविक द्वार है।
कर्म-बोध : दोष से स्वीकृति की यात्रा
"जब मन यह समझ लेता है कि हर कर्म का बीज उसी में फलित होता है, तब वह दूसरों को दोष देना

छोड़कर अपने भीतर जाँकना सीख जाता है।"
यह युवावस्था कर्म-सिद्धांत की बाह्य नहीं, बल्कि उसकी आंतरिक और चेतन व्याख्या प्रस्तुत करता है।
साधना व्यक्ति कर्मफल को मध्य की घटना मानता है और प्रकृत, फल फल भिन्ना। पर आध्यात्मिक दृष्टि अतीत है कि कर्म का बीज उसी क्षण मन में अंकुरित हो जाता है जिस क्षण वह किया जाता है। जब मन यह जान लेता है कि दुःख-सुख का स्रोत बाहर नहीं, अपनी ही चेतना की अवस्था है, तब दोषारोपण का स्वभाव स्वतः गिरने लगता है।
दोष देना अहंकार की रक्षा है, जबकि स्वीकार करना आत्मबोध की शुरुआत।
यह बोध मनुष्य को पीड़ित से साक्षी बनाता है। और साक्षी बनते ही कर्म बंधन नहीं रह जाता वह साधना में परिवर्तित हो जाता है।
यहाँ से गुणित की यात्रा आरंभ होती है।
भगवान गणेश विवेक के अग्रिमूर्ति हैं।

उनका विशाल मस्तक इस सत्य का प्रतीक है कि जीवन में घटने वाली हर परिस्थिति केवल बाहरी कारणों की देन नहीं, बल्कि हमारे ही कर्म-बीजों की परिणति है।
जब तक मन दोषारोपण करता है, तब तक वह दिव्यों से संघर्ष करता रहता है। पर जैसे ही मन स्वीकृति में प्रवेश करता है "जो है, वह मेरे ही कर्मों का फल है" दिव्य स्वयं मार्ग में परिवर्तित हो जाते हैं।
गणेश-दर्शन हमें सिखाता है कि विवेक का पहला चरण है अपने कर्मों की पूर्ण जिम्मेदारी लेना। यही अहंकार का विसर्जन है और यही से आत्मबोध का आरंभ होता है।
चिंता-बोध : ऊर्जा से जागरण तक
"चिंता मन की ऊर्जा है यदि वह संसार में गटकते तो बोल जाती है, और यदि आत्मस्वरूप की ओर मुड़े तो बुध ग्रह की दीपक बन जाती है।"
यह सुविचार चिंता को दीपक नहीं देता, बल्कि उसे ऊर्जा के रूप में पर्यवर्तित है।

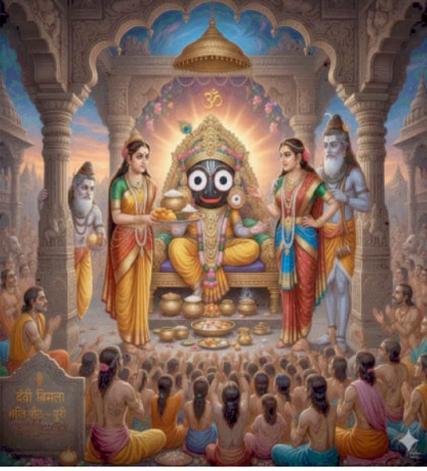
आध्यात्मिक दृष्टि में मन को कोई भी अवस्था निरर्थक नहीं होती चाहे वह चिंता से, मन से या आकांक्षा।
चिंता इसलिए पीड़ा बनती है क्योंकि वह मध्यम में गटकती है, जहाँ चेतना का कोई ठोस आधार नहीं होता।
पर वही चिंता यदि "अ कोन हूँ?", "मेरा सत्य क्या है?", "कैसे प्रश्नों में रूपांतरित हो जाऊँ?" जैसे प्रश्नों में रूपांतरित हो जाऊँ, तो वही ऊर्जा जागरण बन जाती है।
यह रूपांतरण मन को दबाने से नहीं, दृष्टि बदलने से होता है।
जहाँ चिंता आत्मस्वरूप की ओर मुड़ती है, वहाँ वह दीपक बन जाती है जो अज्ञान को नहीं, अंधेरे को जलाता है।
इसी कारण अधिकांश साधक दुःख से नहीं, दुःख-बोध से जागते हैं।
गणेश-दर्शन : मन की दिशा
भगवान गणेश का सूक्ष्म नृपक वालन

मन का प्रतीक है तेज, चंचल, अस्थिर और खोजी।
मन को दबाया नहीं जा सकता, उसे केवल दिशा दी जा सकती है।
जब वही मन चिंता बनकर मध्यम और मन में टोड़ता है, तो जीवन अवशेष हो जाता है। पर जब वही ऊर्जा ईश्वर-स्वरूप, आत्मचित्तन और साधना में प्रवाहित होती है, तो चिंता चेतना में परिवर्तित हो जाती है।
गणेश जी यह नहीं कहते कि मन को रोक दो, वे कहते हैं- मन को मेरे चरणों की ओर मोड़ दो। यहाँ से चिंता तप बनती है और तप बोध।
भगवान गणेश आपके विवेक को इतना प्रखर करें कि आप अपने कर्मों की जिम्मेदारी मन नहीं, बोध के साथ स्वीकार कर सकें; और प्रत्येक दिव्य आपके लिए मार्ग का प्रकाश बन जाए।
गणपति ब्रह्मा आपकी चिंताओं को दमन नहीं, दिशा दें ताकि मन की प्रत्येक ऊर्जा

आत्मचित्तन, साधना और चेतना के दीपक में रूपांतरित हो जाए।
आत्म-दर्शन का सार न तो कर्म से पलायन है और न ही मन को जकड़ देना। यह जिम्मेदारी और रूपांतरण का पथ है।
जब मन यह स्वीकार करता है कि जीवन की हर स्थिति मेरे ही कर्म-बीजों की परिणति है, तब दोष, शिकायत और अहंकार स्वतः विलीन होने लगते हैं। और जब वही मन चिंता की अवस्था से उठकर आत्मस्वरूप की खोज में प्रवृत्त होता है, तो पीड़ा साधना बन जाती है और साधना बोध।
भगवान गणेश हमें यही सिखाते हैं मन को रोकना नहीं है, उसे सही दिशा देनी है; कर्म से भागना नहीं है, उसे विवेक के साथ जीना है। यहाँ से आत्म-दर्शन आरंभ होता है, और यहाँ से मुक्ति की यात्रा भी।
ॐ नमो गणपतये नमः।

कौन हैं देवी बिमला, पुरी में जिनको भोग लगे बिना अपना प्रसाद नहीं चखते भगवान जगन्नाथ

पिंकी कुंडू
भारत में जिस तरह महादेव शिव के 12 ज्योतिर्लिंग उनके निवास स्थान के तौर पर मशहूर हैं, ठीक उसी तरह देश में चारों दिशाओं में चार वैष्णव धाम भी हैं जो कि भगवान विष्णु का घर कहलाते हैं। ये चारों विष्णु धाम चार पुरियों के रूप में प्रसिद्ध हैं, जिनमें जगन्नाथ धाम का अलग ही महत्व है। एक आम मान्यता है कि श्रीविष्णु ब्रह्मनाथ में अलकनंदा नदी में स्नान करते हैं, द्वारिका पुरी में वस्त्र पहनते हैं, पुरी यानी जगन्नाथ धाम में भोजन करते हैं और फिर रामेश्वरम में रात्रि शयन करते हैं। ब्रह्मनाथ में जहाँ भगवान विष्णु अवतार में हैं तो वहीं द्वारिका में वह द्वारिकाधीश कृष्ण हैं और राजा हैं। रामेश्वरम, जो कि वैसे तो महादेव शिव का धाम है, लेकिन यहाँ महाविष्णु श्रीराम के रूप में पूजे जाते हैं तो पुरी धाम में वह आम भक्तों के लिए सहज उपलब्ध हैं। यहाँ वह सखा हैं, साथी हैं और अपने दीनबंधु नाम को सार्थक करते हैं। पुरी में विष्णुजी के भोजन करने की मान्यता के कारण ही यहाँ का 'महाभोग-महाप्रसाद' बहुत प्रसिद्ध है।



श्री विष्णु भगवान

एक किवंदती है कि सभी को कृपा के रूप में मिलने वाला ये महाभोग पहले सिर्फ विष्णुजी के लिए ही था। यहाँ देवी लक्ष्मी उनके लिए अपने हाथों से पकवान बनाकर और थाल सजाकर उन्हें भोजन कराती थीं। ऐसा इसलिए क्योंकि वह त्रेतायुग में सीता के रूप में श्रीराम को ठीक से भोजन नहीं करा सकी थीं। इस महाभोग को पाने के लिए शिवजी और ब्रह्माजी ने बहुत कोशिश की, लेकिन विफल रहे। फिर उन्होंने योजना के तहत नारद मुनि को अपनी लालसा पूरी करने का जरिया बनाया। देवर्षि नारद पुरी के जगन्नाथ धाम पहुंचे तो थे महाभोग की लालसा में लेकिन, उसे पाने में विफल रहने के बाद उन्होंने माता लक्ष्मी से प्रार्थना करते हुए कहा कि, नारायण की सेवा को मैं हमेशा करता ही रहा हूँ, अपनी भी सेवा का अवसर आप मुझे दें, देवी लक्ष्मी ने नारद मुनि की बात मान ली और उन्हें कभी ईधन लाने, कभी जल लाने, कभी अन्न लाने आदि के काम में लगा दिया। इस तरह वह देवर्षि नारद को 12 वर्षों तक देवी लक्ष्मी की सेवा करते रहे। इस तरह वह लक्ष्मीजी की सुबह से लेकर शाम तक की सारी दिनचर्या समझ चुके थे। एक दिन देवर्षि नारद भोर की पूजा के लिए वन से लाए कई सुगंधित फूलों की एक माला लेकर लक्ष्मीजी की सेवा में पहुंचे और उन्हें ये माला पूजा के लिए भेंट में दी। कुछ पुष्पों की सुगंध और कुछ नारद मुनि की इतने साल की सेवा से प्रभावित होकर देवी लक्ष्मी ने उनसे उस दिन वरदान मांगने के लिए कह दिया।

नारद मुनि, जो 12 साल से इसी एक दिन का इंतजार कर रहे थे, उन्होंने मौका देखते ही इंत से अपना मनचाहा वरदान मांग लिया। उन्होंने कहा, बस माता मुझे एक बार भगवान जगन्नाथ का महाप्रसाद चखने दीजिए, नारद मुनि को ये इच्छा सुनते ही लक्ष्मीजी सोच में पड़ गईं। अब या तो नारायण को दिया वचन भंग होने वाला था, या फिर नारद मुनि को दिया वरदान। ऐसे में उन्होंने देवर्षि से कहा- ठीक है, सही समय आने पर मैं आपको महाभोग जरूर खिलाऊंगी। नारद मुनि ये सुनकर खुशी-खुशी वहां से चले गए। अगले दिन जब नारायण भोजन करने पहुंचे तब देवी लक्ष्मी को चिंता में देखकर उसका कारण पूछा। उनके पूछने पर महालक्ष्मी ने उन्हें देवर्षि नारद को दिए वरदान के बारे में बताया। सारी बात सुनकर विष्णु जी बोले, ठीक है देवी, आपका वरदान मेरा ही वरदान है। आप देवर्षि नारद को जरूर महाभोग खिला दें, लेकिन उनसे कहिएगा कि भोजन के साथ-साथ वह इस बात को भी पचा जाए कि उन्होंने महाभोग चखा है। अगर ऐसा नहीं हुआ तो सदियों से जो मैं सभी के लिए मना करता आ रहा हूँ, इससे शिवजी और ब्रह्म देव को अच्छा तो नहीं लगना।

विष्णुजी की अनुमति मिलने पर देवी लक्ष्मी ने एक दिन नारद मुनि को भोजन पर आमंत्रित किया और उन्हें प्रभु का महाभोग चखाया। नारद मुनि यह दिव्य भोजन करके नसिके तृप्त हुए, बल्कि आनंद से भर गए। उन्होंने थोड़ा सा और भोजन बाद के लिए भी मांग लिया और अपनी पोटली में लेकर त्रिलोक भ्रमण करते रहे। इस दिव्य भोजन के बाद उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था और वह नारायण-नारायण के साथ मन ही मन हंसते-मुस्कुराते चले जा रहे थे। उधर, कैलाश पर महादेव ने देवताओं को एक सभा बुलाई थी। इस सभा में इंद्र और यम की समस्याओं पर बात होनी थी। यमराज की समस्या ये थी कि धरती पर वैकुण्ठ के आ जाने से कर्म का सिद्धांत और संतुलन बिगड़ रहा है। इसी बात पर चर्चा हो रही थी। इतने में देवर्षि नारद भी वहाँ पहुंच गए। सभी ने उनका सत्कार किया, फिर चर्चा शुरू हुई। इस दौरान महादेव ने कहा, वैसे ये तो बड़े आनंद की बात है कि धरती पर जगन्नाथ धाम स्थापित हुआ है और श्रद्धालुओं को धरती पर ही वैकुण्ठ का सुख मिल रहा है। क्या इससे भी बड़े आनंद की बात हो सकती है? देवर्षि नारद, जो कि अभी तक महाभोग के स्वाद में ही डूबे हुए थे, अचानक ही बोल पड़े, "हो सकती है महादेव... बिल्कुल हो सकती है... अगर आपने जगन्नाथ धाम का महाभोग चखा हो तो..." ये सुनकर शिवजी समेत सभी लोग सकपका गए। वहाँ, नारद मुनि भी घबरा गए कि अनजाने में उन्होंने ये क्या बोल दिया। इसे तो गुप्त रखना था।

अब उनकी बात सुनकर शिवजी ने पूछा कि क्या आपने महाप्रसाद चखा है? अब नारद मुनि फंस चुके थे, झूठ नहीं बोल सकते थे, इसलिए उन्होंने सारी बात बताई और ये भी बता दिया कि वह थोड़ा प्रसाद लेकर भी

"राम" को सभी मंत्रों का सार क्यों कहा जाता है।

पिंकी कुंडू
अधिकांश लोग राम का जाप करते हैं।
लेकिन बहुत कम लोग इसकी शक्ति को समझते हैं। यह महज एक नाम नहीं है।
यह ठोस विज्ञान + आध्यात्मिकता + मोक्ष है।
1 **राम = रा + म**
प्राचीन ऋषियों ने शब्दों की रचना यही नहीं की थी। प्रत्येक अक्षर का अपना अर्थ होता है।
रा + म = राम
और ये दोनों मिलकर दिव्य शक्ति का द्वार खोलते हैं।
2 **रा (र) - अग्नि**
"रा" अग्नि है।
* अशुद्धियों को जलाता है
* अहंकार का नाश करता है
* पापों और अज्ञान को भस्म करता है
संत कबीर ने कहा:
"रा वह अग्नि है जो अंधकार को दूर करती है।"
3 **जैसे आग लकड़ी को जलाती है**
र कर्मों को जलाता है।
र भय को जलाता है।
र भ्रम को जलाता है।
इसीलिए मौन में भी राम का जाप शक्तिशाली प्रतीत होता है।

4 **आ (आ) - विस्तार**
दीर्घ स्वर आ केवल सजावट नहीं है।
यह दर्शाता है:
* आत्मा (स्वयं)
* आकाश (स्थान)
आक्षर का विस्तार यह हृदय को खोलता है। यह श्वास को ईश्वर से जोड़ता है।
5 **म (म) - करुणा**
"माँ" शीतलता और पूर्णता प्रदान करती है।
* मातृत्व ऊर्जा
* करुणा
* चंद्रमा जैसी शांति
अग्नि से शूद्ध होने के बाद... माँ आपको आलिंगन देती है।
6 **एक शब्द में समाहित यात्रा**
र - जलता है
आ - फैलता है
म - पूर्णता प्रदान करती है
इसीलिए राम का जाप नहीं किया जाता।
राम का अनुभव किया जाता है।
7 **इसीलिए**
* संत "राम" के वेश में रहते थे।
* तुलसीदास ने रामचरितमानस लिखा।
* बहुतेक के अंतिम शब्द "राम"



थे।
क्योंकि राम अनंत तक पहुँचने का सबसे छोटा मार्ग है।
8 **नारा नहीं। राजनीति शक्ति।**
राम स्पंदन हैं।
राम सत्य हैं।
राम मुक्ति हैं।
जब आप राम का जाप करते हैं, तो ब्रह्मांड सुनता है।
9 **एक नाम। असीम शक्ति।**
र + म = सभी मंत्रों का सार वह ध्वनि जो शुद्ध करती है, विस्तार करती है और एक करती है।

यदि "महाभारत" को पढ़ने का समय न हो तो भी इसके नौ सार- सूत्र हमारे जीवन में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं:-

कौरव
1. संतानों की गलत मांग और हठ पर समय रहते अंकुश नहीं लगाया गया, तो अंत में आप असहाय हो जायेंगे
कर्ण
2. आप भले ही कितने बलवान हो लेकिन अधर्म के साथ हों, तो आपकी विद्या, अस्त्र-शस्त्र-शक्ति और वरदान सब निष्फल हो जायेंगे
अश्वत्थामा
3. संतानों को इतना महत्वाकांक्षी मत बना दो कि विद्या का दुरुपयोग कर स्वयंनाश कर सर्वनाश को आमंत्रित करे।
भीष्मपितामह
4. कभी किसी को ऐसा वचन मत दो कि आपको अधर्मियों के आगे समर्पण करना पड़े।
दुर्योधन
5. संपत्ति, शक्ति व सत्ता का दुरुपयोग और दुराचारियों का साथ अंत में स्वयंनाश का दर्शन कराता है।
धृतराष्ट्र
6. अंध व्यक्ति- अर्थात् मुद्रा, मदिरा, अज्ञान, मोह और काम (मृदुला) अंध व्यक्ति



के हाथ में सत्ता भी विनाश की ओर ले जाती है।
अर्जुन
7. यदि व्यक्ति के पास विद्या, विवेक से बंधी हो तो विजय अवश्य मिलती है।
शकुनि
8. हर कार्य में छल, कपट, व प्रपंच रच कर आप हमेशा सफल नहीं हो सकते
युधिष्ठिर
9. यदि आप नीति, धर्म, व कर्म का सफलता पूर्वक पालन करेंगे, तो विश्व की कोई भी शक्ति आपको पराजित नहीं कर सकती।
यदि इन नौ सूत्रों से सबक लेना सम्भव नहीं होता है तो जीवन में महाभारत संभव ही जाता है।
॥ जय श्रीकृष्ण ॥

हिजाब प्रकरण ले चुका है बड़े विमर्श का रूप

कुमार कृष्णन

हिजाब विवाद की गूंज बिहार से ज्यादा अन्य राज्यों में सुनाई दे रही है। सोशल मीडिया पर नीतीश सरकार की तीखी आलोचना हो रही है। वहीं जदयू की ओर से सफाई देते हुए कहा गया है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मुस्लिम समाज, खासकर पसमांदा समाज के उद्धान के लिए लगातार काम किया है। दूसरी ओर अमर नुसरत परवीन अपने फैसले पर कायम रहती हैं तो यह देखना अहम होगा कि सरकार इस मामले में आगे क्या रुख अपनाती है। फिलहाल यह मुद्दा राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बना हुआ है और इस पर लगातार प्रतिक्रियाएं सामने आ रही हैं। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से जुड़ा हिजाब मामला अब और तूल पकड़ता जा रहा है। यह विवाद बिहार की सीमाओं से बाहर निकलते हुए दो राज्यों—उत्तर प्रदेश और कर्नाटक—तक पहुंच गया है जहां मुख्यमंत्री के खिलाफ प्रार्थमिकी दर्ज कराई गई है।

नीतीश कुमार के खिलाफ पहली ज़ीरो प्रार्थमिकी उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के केसरबाग थाने में दर्ज की गई है। यह शिकायत समाजवादी पार्टी की प्रवक्ता सुमैया राणा ने कराई है। उन्होंने आरोप लगाया है कि सार्वजनिक मंच पर एक महिला का हिजाब हटाना महिला सम्मान और गरिमा के खिलाफ है। शिकायत में कहा गया है कि इस घटना से बड़ी संख्या में महिलाओं में नाराजगी है और इसे हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए।

इसी मामले में कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु में भी कानूनी कार्रवाई की गई है। यहां वकील ओवेज हुसैन ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के खिलाफ हज़ीरो प्रार्थमिकी दर्ज कराई है। उनका आरोप है कि यह कृत्य महिला की मर्यादा भंग करने की श्रेणी में आता है और सार्वजनिक जीवन में बैठे व्यक्ति से ऐसी संवेदनशीलता की अपेक्षा नहीं की जा सकती।

समाजवादी पार्टी की प्रवक्ता सुमैया राणा ने मीडिया से बातचीत में कहा कि वह स्वयं भी हिजाब पहनती हैं और यदि उनके साथ इस तरह का व्यवहार होता तो वह भी चुप नहीं रहतीं। उन्होंने कहा कि यह मामला किसी एक महिला तक सीमित नहीं है, बल्कि सभी महिलाओं के निजी अधिकार और सम्मान से जुड़ा है। इस पूरे प्रकरण पर राजनीतिक बयानबाजी भी तेज हो गई है। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने नीतीश कुमार पर तंज कसते हुए कहा कि सार्वजनिक पद पर बैठे लोगों को अधिक संवेदनशील और जिम्मेदार व्यवहार करना चाहिए। विपक्ष इस घटना को सत्ता का अहंकार बता रहा है, जबकि सत्तापक्ष बचाव की स्थिति में नजर आ रहा है। हिजाब से जुड़ा यह मामला अब कानून, राजनीति और सामाजिक संवेदनशीलता के बीच एक बड़े विमर्श का रूप ले चुका है।

बॉलीवुड की कई एक्ट्रेसस ने इस मामले की खूब आलोचना की है। जायरा वसीम से लेकर राखी सावंत और अब सना खान ने भी मुस्लिम महिला डॉक्टर का हिजाब खींचने पर नीतीश कुमार के प्रति गुस्सा जाहिर किया है। आज जो हम अपनी सेफ्टी की बात करते हैं, मार्च करते हैं, कुछ ही जाता है तो हम प्रोटेस्ट करते हैं, कैडेल मार्च करते हैं, ये सब हम क्यों कर रहे? क्योंकि हम सरकार से चाहते हैं कि लड़कियों की सुरक्षा के लिए कुछ हो।

बिहार की राजधानी पटना में 15 दिसंबर को एक ऐसी घटना घटी जिसने महिला अस्मिता की रक्षा के गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सोमवार को आयुष डॉक्टरों को नियुक्ति पत्र दे रहे थे। इस दौरान अपना नियुक्ति पत्र लेने आई महिला डॉक्टर नुसरत परवीन का हिजाब उन्होंने सबके सामने मंच पर ही खींच लिया। इस घटना का वीडियो भी सामने आया और कोई संदेह नहीं कि नीतीश कुमार ने पूरे होशो हवास में महिला का अपमान किया, उसका



हिजाब खींचने की अभद्रता की। एक पल को इस घटना को हिन्दू-मुस्लिम नजरिए से हटकर देखें तो यह वैसा ही कुकृत्य है मानो किसी महिला का घृष्ट उसकी अनुमति के बिना उठा देना या किसी का दुपट्टा खींच देना।

हद तो यह है कि इस घटना पर माफ़ी मांगना तो दूर, नीतीश कुमार या उनकी पार्टी जेडीयू या उनकी सहयोगी भाजपा ने अब तक इस पर अफ़सोस तक नहीं जताया है बल्कि इसे मामूली घटना बताकर चलाता किया जा रहा है। मुख्यमंत्री को बचाने के लिए कहा जा रहा है कि वे यह देख रहे थे कि जिसे नियुक्ति पत्र मिल रहा है, वह सही व्यक्ति है या नहीं। इससे ज़्यादा लचर तर्क नहीं हो सकता क्योंकि मुख्यमंत्री के कार्यक्रम में जाने से पहले बाकायदा कई स्तरों पर सुरक्षा होती है। पहचान पत्र देखे जाते हैं और जिन्हें नियुक्ति पत्र मिलना था, वो कौन हैं, इसकी भी शिनाख्त हुई होगी। अगर नीतीश कुमार को फिर भी पड़ताल करनी थी, तो वे नुसरत परवीन को हिजाब हटाने कह सकते थे लेकिन खुद बढ़कर हिजाब खींचना अक्षम्य है।

क्रॉसरो में तो इस मुद्दे पर नीतीश कुमार से इस्तीफ़े की मांग की है। राजद, पीडीपी, सपा समेत



कई दल नीतीश कुमार की आलोचना कर रहे हैं जबकि अखिल भारतीय मुस्लिम महिला पर्सनल लॉ बोर्ड की अध्यक्ष शाइस्ता अंबर ने नीतीश कुमार से इस्तीफा मांगा है, साथ ही न्यायपालिका को इस मामले में दखल देने की अपील की है।

दूसरी तरफ उत्तरप्रदेश में केबिनेट मंत्री संजय निषाद ने तो नीतीश कुमार के बचाव में कह दिया कि बुर्का उतरने पर इतना बवाल हो गया. अगर कहीं और छू देते तो क्या होता। वो भी तो आदमी ही है ना। संजय निषाद के इस बयान पर भी विपक्ष ने आपत्ति दर्ज कराई है। समाजवादी पार्टी की नेता सुमैया राणा ने इस टिप्पणी को आपत्तिजनक बताते हुए लखनऊ के केसरबाग थाने में नीतीश कुमार और संजय निषाद दोनों के खिलाफ शिकायत दर्ज करा दी जिसके बाद संजय निषाद का कहना है कि उनकी बात को गलत संदर्भों में लिया गया। वे तर्क दे रहे हैं कि भाषा पर पूर्वांचल के प्रभाव से उनकी बात को गलत समझ लिया गया। मान लें कि संजय निषाद को ठीक तरीके से नहीं समझा गया लेकिन हिजाब खींचने को उन्होंने गलत नहीं माना, यह तो जाहिर ही है।

संजय निषाद ने कहा है कि इस मामले पर राजनीति की जा रही है। नीतीश कुमार के काम

को जनता जानती और समझती है। जनता बार-बार उन्हें समर्थन दे रही है और मुख्यमंत्री बना रही है। उन्होंने जो काम किया है, वह जनता के सामने है। आगे भी जनता ही तय करेगी कि उन्हें समर्थन देना है या नहीं। यानी महिला के अपमान पर आपत्ति जताने को राजनीति कहा जा रहा है और बार-बार जीतने या 10 बार मुख्यमंत्री बन जाने का यह अर्थ कतई नहीं है कि नीतीश कुमार को किसी के भी साथ, कैसा भी व्यवहार करने की छूट मिलती है। जीत किसी को भी मर्यादा भंग करने की इजाज़त नहीं देती।

नीतीश कुमार ने पहली बार महिला विरोधी कार्य नहीं किया है। विधानसभा के भीतर उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी की अभद्र तरीके से आलोचना की थी. इससे पहले जब वे राजद के सहयोग से मुख्यमंत्री थे, तब नवंबर 2023 में राज्य विधानसभा में जनसंख्या नियंत्रण और महिला शिक्षा के महत्व पर बोलते हुए उन्होंने विवादित बयान दिया था। उस समय उनके विरोध में बैठी भाजपा ने नीतीश कुमार के बयान को शर्मनाक और भद्दा बताते हुए माफ़ी की मांग की थी लेकिन आज भाजपा को नीतीश कुमार की हरकत पर कोई शर्मिंदगी नहीं है। महिला आयोग

भी इस मुद्दे पर चुप है। कम से कम इन पंक्तियों के लिखे जाने तक राष्ट्रीय महिला आयोग या राज्य महिला आयोग ने नीतीश कुमार पर कोई कार्रवाई नहीं की है।

वहीं इस घटना की पीड़ित डॉक्टर नुसरत ने सरकारी नौकरी न करने का फैसला किया है और घटना के अगले दिन ही वे बिहार छोड़कर कोलकाता चली गईं हैं। उनके भाई हैं नेता याकि, ‘उसने नौकरी न करने का पक्का मन बना लिया है लेकिन, मैं और परिवार के सभी लोग उसे अलग-अलग तरीकों से मनाने की कोशिश कर रहे हैं। हम उसे यह भी समझा रहे हैं कि यह गलती किसी और की है। हमारा कहना है कि किसी और की गलती के लिए उसे क्यों बुरा महसूस करना चाहिए या तकलीफ उठानी चाहिए।’ बता दें कि डॉक्टर नुसरत परवीन के पति एक कॉलेज में क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट के तौर पर काम करते हैं।

डॉ. नुसरत ने कहा कि मैं यह नहीं कह रही हूँ कि मुख्यमंत्री ने जानबूझकर ऐसा किया, लेकिन जो हुआ वह मुझे अच्छा नहीं लगा। किंवदंती सारे लोग मौजूद थे. कुछ लोग हंस भी रहे थे। एक लड़की होने के नाते वह मेरे लिए अपमान जैसा था। उन्होंने कहा कि मैंने स्कुल से लेकर कॉलेज तक हिजाब में ही पढ़ाई की है। घर, बाजार या मॉल, हर जगह मैं हिजाब पहनकर जाती रही हूँ और कभी ऐसी स्थिति नहीं आई। मेरे अब्बू-अम्मी ने हमेशा यही सिखाया कि हिजाब हमारी संस्कृति का हिस्सा है। मेरी गलती क्या थी, यह मुझे समझ नहीं आ रहा। उस दिन को याद करके मैं सहम जाती हूँ।

इस घटना के बाद नुसरत परवीन अपना हाँसला कमजोर न पड़ने दें, यही दुआ की जा सकती है लेकिन अब बिहार के लोगों को सोचना होगा कि जीविका दीदी के नाम पर महिलाओं के खाते में 10-10 हजार रुपए डालकर जेडीयू ने जीत तो हासिल कर ली लेकिन हिजाब प्रकरण को इनके चेहरे से नक़ब उतार दिया है।

सावरकर की प्रतिमा का अनावरण या हिन्दू राष्ट्र के एजेंडे का निरावरण

(आलेख: बादल सरोज)

आजकल के हालचाल में दर्ज किये जाने लायक नई बात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की छाप तिलक सब छोड़ अनावृत, निरावृत धजा में आने की चाल-ढाल है। राजनीति से अलग-थलग रहने और सांस्कृतिक संघटन होने का दावा करने वाला दुनिया का ‘सबसे बड़ा’ बिना रजिस्ट्रेशन वाला एनजीओ अब खुलकर सत्ता और उसकी पार्टी के साथ आलिंगनबद्ध दिखने में गुरेज नहीं कर रहा। उत्तर से सुदूर दक्षिण तक हर जगह गाँठ बांधे जोड़े में दिखने के लिए आतुर और तत्पर है। लगता है कथा अब लिपे से बाहर जा चुकी है। न शासन के प्रोटोकॉल की मर्यादाओं की परवाह है, ना ही दिखावे के लिए ही कुछ दूरी बनाने की सावधानी है। खुला खेल फरुखाबादी है। अयोध्या कांड के हाल के दोनों अध्यायों में आर एस एस प्रमुख मोहन भागवत सत्ता के नम्बर वन के साथ आगे-आगे प्रकटयमान थे, तो पिछले सप्ताह अंडमान में नम्बर दो के साथ विराजमान थे।

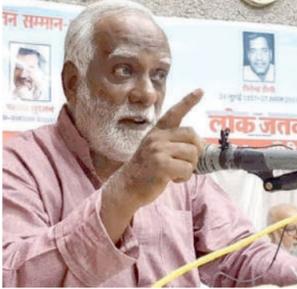
अपने अतीत के कारनामों के चलते अब तक खुद कुनबे द्वारा एक हाथ की दूरी पर रखे गए संघ के एकदम अंतरंग साथ तक पहुँच जाने की स्थिति में दिखना सिर्फ फोटो फ्रेम में समाने या चेहरा दिखाने भर का प्रसंग नहीं है। यह इसे प्रतिष्ठा और स्वीकार्यता देने का मामला तो है ही, मगर उससे ज़्यादा भारतीय इतिहास से वर्तमान तक देश की जनता के विराट बहुमत द्वारा खारिज और अस्वीकार किये गए इसके पूरी तरह अभागीय और बिल्कुल असंवैधानिक एजेंडे को आगे बढ़ाने का और इसी के साथ उसे एक तरह से देश की सरकार का लक्ष्य और ध्येय बनाना है।

12 दिसंबर को अंडमान द्वीप समूह के वेओदनाबाद – श्रीविजयपुरम – में ‘वीर सावरकर इम्प्रेसेशन पार्क’ का उदघाटन समारोह इसकी ताज़ी पिछलाई है। मजे की बात यह है कि जिनकी प्रतिमा पधराई जा रही थी और प्रेरणा लेने वाला वगीचा उदघाटित किया जा रहा, वे विनायक दामोदर सावरकर जीवन भर जिस पार्टी के नेता रहे उस अखिल भारतीय हिन्दू महासभा का कोई प्रतिनिधि मंच तो छोड़िए, दोषी तक में नहीं था। कौन किसके साथ था, इस पचड़े में फंसने की बजाय यह कहना ही पर्याप्त है कि संघ सरसंचालक मोहन भागवत और गृहमंत्री अमित शाह का संग साथ था।

इस अवसर पर जो साथ-साथ कहा गया, वह गौरतलब है। भारत के गृहमंत्री के नाते बोलते हुए अमित शाह ने जहां सावरकर को देश का सबसे महान स्वतन्त्रता सेनानी बताया और कहा कि उनकी प्रतिमा अपने वाली पीढ़ियों को उनके त्याग और देशभक्ति की याद दिलाती रहेगी। शाह यह भी बोले कि ‘सावरकर को ‘वीर’ की उपाधि किसी सरकार ने नहीं, बल्कि देश की जनता ने उनके अदम्य साहस के लिए दी है।’ यह कितना बड़ा झुठ है इसके विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है। इतना ही काफी है कि यह बात अब सिर्फ उनसे असहमत लोग ही नहीं, उनके प्रशंसक, समर्थक और जीवनीकार तथा जिस कतिब्या में उन्हें ‘वीर सावरकर’ संबोधन दिया गया था, उसके प्रकाशक भी मान चुके हैं कि जिसमें ‘वीर सावरकर’ लिखा गया उस कतिब्या के लेखक – चित्रगुप्त – कोई और नहीं, स्वयं सावरकर ही थे।

रही उनके ‘महान’ स्वतन्त्रता सेनानी होने की बात, तो कभी-कभी लगता है, जैसे समय-समय पर उनके बारे में इस तरह का दावा ठोकरकर आरएसएस जानबूझकर देश के स्वतन्त्रता संग्राम में उनकी भूमिका के कृष्ण-पक्ष को पुनि पुनि उजागे में ला देता है और ऐसा करके उनके द्वारा आजीवन की गयी संघ की आलोचनाओं, उसके उड़ाए गए मजाक का बदला लेता है।

दस्तावेज़ी सबूतों के साथ लिखे गए ग्रंथों के हिमालयी ऊँचाईयों के पहाड़ के पहाड़ मौजूद हैं, जो बताते हैं कि आजादी की लड़ाई में 1909 के बाद वाले सावरकर की भूमिका और योगदान नायक की



नहीं, प्रतिनायक की थी। उन्होंने भारतीय जनता के इस महासंग्राम को सिर्फ रूप में नहीं, सार में भी ऐसा अपूर्णीय नुकसान पहुंचाया था, जिसकी कोई और दूसरी मिसाल नहीं है। उनकी दो-दो आजीवन कारावासों की कहानी सुनाने वाले यह बात नहीं बताते कि कुल जमा 12 वर्ष के कारावास में असल में वे 10 वर्ष से भी कम समय कालापानी के नाम से कुख्यात उस जेल में रहे, जहां बाकी स्वतन्त्रता सेनानी या तो कभी रिहा ही नहीं हुए थे या आजादी के बाद ही छूट पाए थे।

जहां तक जेल में सावरकर द्वारा भुगती यातनाओं और दूसरी कहानियों की असलियत है, तो उसे उनके समकालीन स्वतंत्रता सेनानी बारीन्द्र नाथ घोष अंडमान की सेलुलर जेल में अपने अनुभवों पर लिखी ‘द्वीपान्तरे कथा’ – द टेल ऑफ माय एक्जाइल – किताब में दर्ज कर देश को बता चुके हैं। सावरकर के जीवन काल में ही बारीन्द्र घोष अपने संस्मरण और बाद के साक्षात्कारों में बताते हैं कि उन्होंने स्वयं कोल्हू से तेल निकालने का काम किया था, लेकिन उन्होंने विनायक दामोदर सावरकर को कभी कोल्हू चलाते हुए नहीं देखा। उनके अनुसार, सावरकर अक्सर जेल की लाइब्रेरी में काम करते थे, किताबें पढ़ते थे और अन्य कैदियों को पढ़ाते थे। मुस्लिम वार्डरों द्वारा हिंदू कैदियों के उत्पीड़न की सावरकर की कहानी को भी बारीन्द्र घोष गलत बताते हुए लिखते हैं कि ‘वार्डरों के हाथों हिंदू और मुस्लिम दोनों ही कैदी समान रूप से प्रताड़ित होते थे।’

वे बताते हैं कि ‘सावरकर जेल प्रशासन के खिलाफ हुए संघर्षों में भी कभी शामिल नहीं हुए। जब नानी गोपाल जैसे क्रांतिकारियों ने जेल में भूख हड़ताल की थी, तब भी सावरकर भाईयों (विनायक या गणेश) ने इसमें भी हिस्सा नहीं लिया था।’

उसी अंडमान में जाकर भागवत और शाह द्वारा सावरकर का उन कारनामों के लिए, जो उन्होंने कभी किये ही नहीं, का गौरवगान करना एक तरह से इस जेल में रहे स्वतन्त्रता सेनानियों का अनादर ही कहा जाएगा।

जैसे वयश यह याद दिलाता जरूरी है कि काला पानी की सेलुलर जेल से रिहा होने वाले तीन चौथाई – 75% – स्वतंत्रता सेनानी लाल झंडे को थामकर आजादी को उसके अगले चरण – भगतसिंह के सपनों की मंजिल – तक ले जाने की लड़ाई में कूद पड़े थे, जबकि सावरकर बीच गुलामी में ही रत्नागिरी में अंग्रेज सरकार के वजीरफाख्वा बनकर 60 रुपये की पेंशन ले रहे थे। यह राशि उस जमाने में कितनी बड़ी थी, इसे समझने के लिए यह बताना काफी होगा कि सावरकर ने उसे बहाने के लिए जब रत्नागिरी कलेक्टर को चिट्ठी लिखी, तो उसने उन्हें जवाब देते हुए कहा कि ‘मैं इसकी सिफारिश करने के योग्य नहीं हूँ, क्योंकि मेरा वेतन आपकी पेंशन से भी कम है।’

12 दिसम्बर को प्रतिमा अनावरण के वक़्त दिए अपने भाषण में मोहन भागवत ने दावा किया कि ‘सावरकर के खतों से देश के प्रति गहरी भक्ति इलकती थी और वे करते थे कि आप सात भाई होते, तो सभी देश के लिए खुशी-खुशी जेल जाते।’ भागवत साहब को सावरकर साहब के किन खतों में देशभक्ति नजर आ गई, ये यह उन्हें बताना चाहिए।



अलबत्ता सावरकर जिन चिट्ठियों के लिए विश्वप्रसिद्ध हैं उन 1911, 13, 14, 18 और 1920 की चिट्ठियों में कातर प्रार्थना और इंग्लैण्ड की रानी से ‘माँ मुझे अपने आंचल में छुपा ले, गले से लगा ले’ के दारुण विलाप और ‘बिगड़े बेटे को सुधारने’, अपनी गोद में जगह देने की मनुहार और बाकी जिनदगी रानी और ब्रिटिश हुकूमत की सेवा करने तथा कभी राजनीति में भाग न लेने की गुहार के सिवाय कुछ नहीं है। मानना पड़ेगा कि वे अपनी बात के धनी थे, रानी की कृपा से रिहा होने के बाद उन्होंने जो कहा था, उसे निबाहा भी: अंग्रेजी राज की सेवा में हर तरह से अपना जीवन झोंक दिया।

1857 की महान लड़ाई -- जिसे उसी वर्ष अमरीका के अखबारों के लिए अपने लेखों में कार्ल मार्क्स ने भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम कहा था – में हिंदू-मुस्लिम की साझी बहादुरी और कुर्बानियों से हासिल कौमी एकता, (जिसकी सराहना स्वयं सावरकर ने 1909 में लिखी अपनी अनन्या अर्च्छी किताब इंडियन वार ऑफ़ इंडिपेंडेंस 1857 में भी की थी) को छिन्न-भिन्न करने और अपनी ही किताब में लिखी बातों के खिलाफ आचरण करने में पूरा शक्ति लगी थी। नमाज के समय मस्जिदों के सामने बैड़ बाजे बजाकर दंगे करवाने का प्रयोग सबसे पहले इन्ही की अगुआई में रत्नागिरी में हुआ, जिसे बाद में संघ के संस्थापक डॉ. हडगेवाम ने अपनी नित्य की जाने वाली क्रिया का हिस्सा बनाया।

इन दिनों कुनबे की प्रचार भुजाएं भारत विभाजन की जिम्मेदारियों की टोपियां पहनाने में लगी हैं। ऐसा

करते में वे बेचारे सावरकर को उनके ‘महान’ योगदान से महरूम कर देती हैं। सावरकर वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने भारत के बंटवारे की आधारशिला रखी थी।

हिंदुत्व शब्द भले 1892 में चंद्रनाथ बसु ने उपयोग में लाया था, मगर उसे साम्प्रदायिक हथियार के रूप में सावरकर ने ही तराशा और धारदार बनाकर प्रस्तुत किया। अपनी कतिब्या ‘हिंदुत्व (एसैसियल ऑफ़ हिंदुत्व)’ में उन्होंने 1922 में ही हिन्दू और मुसलमानों के दो अलग-अलग राष्ट्र की अवधारणा दे दी थी। शेष जीवन में इसे अमल में लाने का ही काम किया। यह सावरकर ही थे, जिन्होंने 1937 के हिंदू महासभा के अहमदाबाद अधिवेशन में दो राष्ट्रों की आवश्यकता पर एक प्रस्ताव पारित कराया। जब कोई तीन वर्ष बाद 1940 में हुए मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में, जिन्ना के नेतृत्व में, दो राष्ट्रों के लिए प्रस्ताव पारित किया गया, तब सबसे पहले उसके स्वागत और अभिनंदन में जिन्ना को बधाई पत्र लिखने वाले भी सावरकर ही थे।

उनकी ही अगुआई वाली हिंदू महासभा थी, जिसने बाद में बंगाल, एनडब्ल्यूएफपी और सिंध विधानसभाओं में मुस्लिम लीग के साथ मिलकर गठबंधन सरकारें बनाईं। भाजपा के पितृपुरुष, पंडित श्रीमती संस्कृत जनसंघ के संस्थापक इंडित श्यामाप्रसाद मुखर्जी बंगाल में सुधारवादी के प्रधानमंत्रित्व वाली ऐसी ही सरकार में उपप्रधानमंत्री बने और सब कुछ के बाद भी बने ही रहे। गाँठ इतनी मजबूत थी कि जब सिंध – जिसे



कुछ दिन पहले राजनाथ सिंह भारत का हिस्सा बनाने की ऊंची फेंक रहे थे, उसकी -- विधानसभा में, जीएम सैयद ने पाकिस्तान के लिए प्रस्ताव रखा, तब भी हिंदू महासभा इन सरकारों का हिस्सा बनी रही।

स्वतंत्र और संप्रभु भारत के वे कितने महान पक्षधर थे, यह हिन्दू महासभा अध्यक्ष के रूप में उनके दौरों में 1937 से 1940 तक उनके साथ रहे सहयोगी भिड़े ने अपनी डायरी में दर्ज किया है। सावरकर के हवाले से वे लिखते हैं कि ‘यदि मजबूरी में अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाना भी पड़े, तो इस देश की सत्ता नेपाल के महाराजा को सौंपकर जाना चाहिये।’ वे लिखते हैं कि ‘ब्रिटेन को भी यह ज़्यादा सम्मानजनक होगा कि भारतीय साम्राज्य की सत्ता, अगर कभी उसके हाथ से निकलती है, तो उसे नेपाल के राजा जैसे ब्रिटेन के बराबर और स्वतंत्र सहयोगी को सौंपा जाए।’

ऐसे अनेक तथ्य गिनाये जा सकते हैं, जो यह बताते हैं कि जेल से रिहा होने के बाद सावरकर अंग्रेजों के एजेंट की तरह काम कर रहे थे, मगर फिलहाल सिर्फ दो ही ले लेते हैं। भागवत अपने भाषण में अंडमान को सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द फ़ौज द्वारा मुक्त कराया गया पहला भू-भाग बता रहे थे, मगर यह नहीं बता रहे थे कि जिनकी धारदार बनाकर प्रस्तुत किया। अपनी कतिब्या ‘हिंदुत्व (एसैसियल ऑफ़ हिंदुत्व)’ में उन्होंने 1922 में ही हिन्दू और मुसलमानों के दो अलग-अलग राष्ट्र की अवधारणा दे दी थी। शेष जीवन में इसे अमल में लाने का ही काम किया। यह सावरकर ही थे, जिन्होंने 1937 के हिंदू महासभा के अहमदाबाद अधिवेशन में दो राष्ट्रों की आवश्यकता पर एक प्रस्ताव पारित कराया। जब कोई तीन वर्ष बाद 1940 में हुए मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में, जिन्ना के नेतृत्व में, दो राष्ट्रों के लिए प्रस्ताव पारित किया गया, तब सबसे पहले उसके स्वागत और अभिनंदन में जिन्ना को बधाई पत्र लिखने वाले भी सावरकर ही थे।

आजादी की लड़ाई में अंग्रेजों को सार रूप में फ़ायदा पहुँचाने का जो काम सावरकर ने किया, वह हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए काम करने वाली ताकतों को कमजोर करने का था। पूरी लड़ाई में वे काँग्रेस और कम्युनिस्टों के खिलाफ रहे, गांधी को सबसे बड़ा दुश्मन मानते रहे। गांधी की हत्या – जिसे कुनबा गांधी वध कहता है -- एकदम ताजे-ताने में अंजाम देकर देश के सबसे महान नायक को मारकर अराजकता और विखंडन पैदा करने की साजिश थी।

जिन सरदार पटेल को इन दिनों ये अपना पुरखा बताने पर तुले हैं, उन्होंने भारत के गृहमंत्री के नाते प्रधानमंत्री नेहरू को 27 फरवरी 1948 और श्यामा प्रसाद मुखर्जी को 18 जुलाई 1948 को लिखी चिट्ठी में साफ़ तौर से इस हत्या का जिम्मेदार सावरकर

और आरएसएस को बताया था। नेहरू को लिखी चिट्ठी में उन्होंने बताया कि ‘हत्या की साजिश हिन्दू महासभा में सावरकर के प्रत्यक्ष नेतृत्व वाली कट्टरपंथी शाखा ने रची और इसे अंजाम दिया।’ गांधी की हत्या में उनकी लिपता, संदेह के आधार पर उनके बरी हो जाने से खत्म नहीं हो जाती। उनके सहयोगियों, अनुयायियों ने बाद में अपनी किताबों में जो ब्यूरा दिया, वह यदि उस समय आ जाता, तो उन्हें शर्तिया कम-से-कम आजीवन कारावास तो होता ही।

12 दिसम्बर को भागवत और शाह ने अपने भाषणों में जब ‘सावरकर जी का चरित्र देखते हैं तो उनके चरित्र में पूर्णता मिलती है। वर्णन बहुत हुआ है, सब प्रकार की प्रतिभा सावरकर जी के पास थी।’ की अतिशयोक्तियों का वाचन भी किया। सार की बात वह थी, जिसे भागवत ने रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि ‘राष्ट्र क्या है इसकी स्पष्ट कल्पना सावरकर जी ने दी है। उन्होंने उसको हिंदू राष्ट्र कहा है। हिंदू की व्याख्या

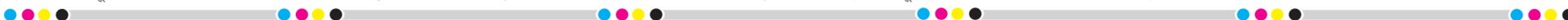
भी बताई है।’ ‘धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक, गणराज्य के गृह मंत्री अमित शाह ने इसे और आगे बढ़ाते हुए कहा कि ‘सावरकर ‘सांस्कृतिक राष्ट्रवाद’ की नींव रखने वाले क्रांतिकारी थे, जिनकी विचारधारा आज भी देश का मार्गदर्शन कर रही है।’ इस तरह अंडमान के तमाशे का असली मकसद सावरकर के बहाने भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने के धतकरम को आगे बढ़ाने का ही था। यही वह ‘प्रतिभा’ है, जिस पर लहालोट होकर कुनबा सावरकर – सावरकर का जाप कर रहा है।

सावरकर का हिन्दू राष्ट्र क्या है?

हिंदुत्व को परिभाषित करते हुए सावरकर पहले ही साफ़-साफ़ कह चुके थे कि उनका जो हिंदुत्व है, उसका हिन्दू धर्म या उसकी परम्पराओं से कोई संबंध नहीं है, यह राज काज चलाने वाली एक राजनीतिक धारणा है। इसका लक्ष्य ‘राष्ट्र का हिन्दूकरण, हिन्दुओं का सैनिकीकरण’ है। उनके मुताबिक़ ऐसा करने के बाद जैसा भारत बनाया जाएगा, उसका मूल मनुस्मृति होगी। जिन सावरकर को अमित शाह ‘सामाजिक बुराइयों को खत्म करने के उनके प्रयासों के लिए वह पहचान नहीं मिली, जो उन्हें मिलनी चाहिये थी।’ वाला बता रहे थे, उनका मनुस्मृति को वेदों के बाद सबसे पवित्र और पूजनीय ग्रंथ बताया जाना उनके ‘सुधारक’ के असली रूप को सामने ला देता है। महिलाओं के प्रति उनकी ‘उदारता’ कितनी थी, यह इटली के फासिस्ट हत्यारे मुसोलिनी की पत्नी की तारीफ़ में लिखते उनके आप्त-वचन साफ़ कर देते हैं। राशेल मुसोलिनी की आरती-सी उतारते हुए उन्होंने लिखा था कि वे इसलिए महान हैं, क्योंकि वे ‘एक ऐसी सीधी-सादी गृहिणी हैं, जो घर की चौखट के बाहर पाँव तक नहीं रखती।’ इसी में नारी के प्रमुख कर्तव्य गिनाते हुए उन्होंने कहा कि ‘घर के काम, बच्चे पैदा करना, पति की सेवा करना, परिवार एवं घर के नौकर-चाकरों का परिपालन ही अच्छी नारी के काम है।’

अंडमान में आरएसएस और भाजपा सरकार की युति ठीक इसी तरह के हिन्दू राष्ट्र की कायमी के एजेंडे को साधने के लिए सावरकर की तारीफ़ के पुलिंदे बाँध रही थी, उन्हें प्रेरणास्रोत बता रही थी। संविधान की शपथ लेकर बने गृह मंत्री सावरकर के ‘सांस्कृतिक राष्ट्रवाद’ को सीढ़ी बना उस पर चढ़कर नट जैसे कातब दिखा रहे थे।

(लेखक लोकजतन के संपादक तथा अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव हैं।)



गलतियां स्वीकार दें भविष्य को लिखार



• विजय गर्ग



जो व्यक्ति एक ही गलती को बार-बार करे उसके लिए अंग्रेजी में एक शब्द है एररिस्ट। एक एररिस्ट व टेररिस्ट में कोई विशेष अंतर नहीं होता। जब कोई व्यक्ति अपनी गलती को स्वीकार करके उसे सुधारने के बजाय उसे बार-बार करता है तभी वह टेररिस्ट या आतंकवादी बनता है। चोरी करना, परिग्रह एवं अतिशय लोभवृत्ति, झूठ बोलना, दादागिरी व हिंसा का सहारा लेना, आज का कार्य कल पर टालना, अपनी भावनाओं या विचारों पर नियंत्रण न करना, बात-बात पर क्रोध करना, क्षमाशीलता व संवेदनशीलता का अभाव, हर स्थिति में असंतुष्ट व छिद्रान्वेषी बने रहना व अन्य दूसरे नकारात्मक भाव या आदतें ऐसी गलतियां अथवा भूलें हैं जिन्हें स्वीकार करके उन्हें दूर करना या सुधारना अनिवार्य है।

जीवन में गलतियां होना स्वाभाविक हैं। हम सभी गलतियां करते हैं। कहा भी गया है कि ईसान गलतियों का पुतला है। इसका एक निहितार्थ ये भी हो सकता है कि व्यक्ति अपनी गलतियों से सीख कर ही ईसान बनता है। जैसे विभिन्न कठिनाइयों ही मनुष्य को विषम परिस्थितियों में जीना और आगे बढ़ना सिखाती हैं वैसे ही उसकी गलतियां भी मनुष्य को सबसे अधिक सीखने का अवसर प्रदान करती हैं। गलतियों के अभाव में मनुष्य कैसे कुछ सीखेगा? गलती कोई अपराध नहीं लेकिन गलतियों को सुधारना जरूरी है। गलती को न सुधारने से वह आदत बन जाती है, हमारे व्यवहार का अंग बन जाती है और हमारा अन्धकार ही छोड़ती है। इसीलिए गलती का पता लगने पर ही उस गलती को दूर न करना अथवा एक गलती को बार-बार दोहराना अपराध नहीं होने पर भी अपराध से कम नहीं माना जाता। प्रायः जब हमसे कोई गलती होती जाती है तो उसको छुपाने के लिए दूसरी गलती कर देते हैं और कई बार अपराध तक कर डालते हैं। जो व्यक्ति एक ही गलती को बार-बार करे उसके लिए अंग्रेजी में एक शब्द है एररिस्ट। एक एररिस्ट व टेररिस्ट में कोई विशेष अंतर नहीं होता। जब कोई व्यक्ति अपनी गलती को स्वीकार करके उसे सुधारने के बजाय उसे बार-बार करता है तभी वह टेररिस्ट या

आतंकवादी बनता है। चोरी करना, परिग्रह एवं अतिशय लोभवृत्ति, झूठ बोलना, दादागिरी व हिंसा का सहारा लेना, आज का कार्य कल पर टालना, अपनी भावनाओं या विचारों पर नियंत्रण न करना, बात-बात पर क्रोध करना, क्षमाशीलता व संवेदनशीलता का अभाव, हर स्थिति में असंतुष्ट व छिद्रान्वेषी बने रहना व अन्य दूसरे नकारात्मक भाव या आदतें ऐसी गलतियां अथवा भूलें हैं जिन्हें स्वीकार करके उन्हें दूर करना या सुधारना अनिवार्य है। अन्यथा हमारे एक सामान्य व्यक्ति से निकृष्ट व्यक्ति में बदलते देर नहीं लगती। इन्हीं गलतियों के कारण एक व्यक्ति कुख्यात बन जाता है और इन्हीं को सुधारकर विख्यात अथवा प्रख्यात हो जाता है। वास्तव में हमारे सभी नकारात्मक भाव या उनसे उत्पन्न सब कर्म हमारी गलतियां ही होते हैं और उन्हें सुधारकर उनके स्थान पर सकारात्मक भाव या उनसे उत्पन्न सब कर्म ही जीवन का अपेक्षित विकास करते हैं। गलतियों किससे नहीं होती? गांधी जी ने अपनी आत्मकथा में अपनी गलतियों अथवा कमियों को स्पष्ट रूप से लिखा है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी जीवन में अनेक गलतियां कीं लेकिन उन्होंने कभी भी किसी गलती को छुपाया या दोहराया नहीं। उन्होंने हिम्मत के साथ अपनी गलतियों को स्वीकार कर उन्हें सुधारा। गांधी जी के बचपन की एक

घटना है। उन पर एक दुकानदार का काफ़ी क्रूर हो गया। उनका क्रूर उतारने के लिए उन्होंने अपनी माताजी के सोने के कड़ों में से थोड़ा सा सोना काटकर बेच दिया और अपना क्रूर चुका दिया। इस घटना से उन्हें बहुत दुख हुआ। वे आत्मलानि से भर उठे। वे सारी बातें अपने पिताजी को बतलाकर उनसे माफ़ी मांगना चाहते थे लेकिन ऐसा करने की उनकी हिम्मत नहीं हुई। उन्होंने सारी बातें एक चिट्ठी में लिखीं और चिट्ठी पिताजी को दे दी। उनके पिता बीमार थे। जब उन्होंने चिट्ठी पढ़ी तो उनकी आंखों से आंसू बहने लगे। गांधी जी भी रोने लगे और उन्होंने पिताजी के सामने प्रण किया कि जीवन में कभी भी गलत कार्य अथवा चोरी नहीं करेंगे। हम सब जानते हैं कि गांधी जी ने जीवनभर अपने प्रण को बखूबी निभाया ही नहीं अपितु अपने दूसरे अवगुणों को भी त्याग कर सद्गुणों को अपने जीवन का आधार बनाया। जब पहली बार कोई गलती हो जाए तो उसे छुपाने के बजाय स्वीकार कर सुधार लेना ही दुरात्मा बनने के बजाय महात्मा बनने की दिशा में प्रगति है। जब भी हम कोई नया काम करना सीखते हैं तो भी कुछ कमियां या गलतियां अवश्य रह जाती हैं। तो क्या हम वो काम करना ही बंद कर दें या जीवनभर गलतियां ही करते रहें? यदि हम चलते-चलते गिर पड़ें तो क्या हम वहीं पड़े रहे या उठकर वापस लौट

जाएं? नहीं। गिरने के बाद उठना और दोबारा सावधानीपूर्वक आगे बढ़ना ही उन्नति व विकास का वास्तविक मार्ग है। गलती मानना भी बहुत हिम्मत की बात है और गलती मानने वाला अपराधी नहीं बहादुर व्यक्ति होता है। बहादुर व्यक्ति ही संसार में विजयी होते हैं। एक अपराधी ही नहीं एक कायर अथवा डरपोक व्यक्ति भी कभी अपनी गलती को नहीं मानता इसीलिए न तो उसकी गलती का सुधार होता है और न वह जीवन में आगे ही बढ़ता है। रत्नाकार नामक व्यक्ति को जब अपनी गलतियों का अहसास हुआ और तो अपना निकृष्ट पेशा त्यागने का निर्णय लिया तो तब जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। उनकी संवेदना इतने चरम पर पहुंच गई कि उन्होंने रामायण जैसे महाकाव्य का सुजन कर डाला और आदि कवि के रूप में विख्यात हुए। अपनी कमियों को खोजकर व उन्हें सुधारकर हम चाहे तो सत बने सकते हैं और न सुधार कर वीरपुत्र या दाऊद बने रहने को अभिशप्त हो सकते हैं। श्रेयस्कर तो यही है कि हम अपनी गलतियों को स्वीकार कर, उन्हें सुधार कर व उनसे सीख लेकर निरंतर आगे बढ़ते रहने का प्रयास करते रहें। गलती करने व हर गलती को स्वीकार कर उसे सुधारने में ही निहित है जीवन का वास्तविक विकास।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब



संपादकीय

चिंतन-मगन



बचपन: तब और अब - एक बदलते परिदृश्य

डॉ विजय गर्ग

बड़े होने का अनुभव एक टेपेस्ट्री है जो सामाजिक बदलावों, तकनीकी छलांगों और विकसित सांस्कृतिक मूल्यों द्वारा लगातार फिर से बुना जाता है। बचपन, एक बार सादगी और स्वायत्तता की विशेषता थी, जीवन के अधिक संरचित, पर्यवेक्षित और डिजिटल रूप से ढूँढे हुए चरण में बदल गया है। कुछ दशकों पहले के रतबरे की तुलना करने से खेल समय, सामाजिक गतिशीलता और माता-पिता के दृष्टिकोण में उल्लेखनीय अंतर प्रकट होता है। आउटडोर टाइम और फ्री प्ले: द ग्रेट डिवाइड सबसे उल्लेखनीय अंतर में से एक यह है कि बच्चे अपना समय कैसे बिताते हैं।

फिर (अतीत): बचपन अक्सर महान आउटडोर और असंरचित मुक्त खेल के आसपास घूमता था। बच्चे अपने पड़ोस में घूमते थे, किले बनाते थे, पेड़ों पर चढ़ते थे और वयस्कों की निरंतर देखरेख के बिना खेल का आविष्कार करते थे। आत्म-निर्देशित खेल के ये क्षण रचनात्मकता, समस्या समाधान कौशल और लचीलापन को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण थे क्योंकि बच्चों ने संघर्ष और नियमों को स्वतंत्र रूप से नेविगेट किया।

अब (वर्तमान): आज का बचपन अक्सर अति निर्धारित होता है। संगठित खेल, पाठ और संरचित प्लेडेट ने बड़े पैमाने पर सहज आउटडोर रोमांच को बदल दिया है। सुरक्षा के डर ने रहेलीकॉन्टर परेंटिंग में वृद्धि की है, जहां पर्यवेक्षण तीव्र और निरंतर होता है। नतीजतन, कई बच्चे स्वतंत्र अन्वेषण के बजाय क्यूरेट किए गए यात्राओं के माध्यम से प्रकृति का अनुभव करते हैं, और मुक्त खेल अक्सर एक रखाई हुई कला है। डिजिटल विसर्जन: स्क्रीन बनाम। सरल सुख प्रौद्योगिकी का उदय आधुनिक बचपन को आकार देने वाला सबसे बड़ा कारक है।

फिर (अतीत): मनोरंजन कम तकनीक वाला था: बोर्ड गेम्स, ट्रेडिंग कार्ड, किताबें पढ़ना और सरल कल्पनाशील रोल-प्ले। स्क्रीन (मुख्य रूप से टेलीविजन) के संघर्ष में आना न्यूनतम और विनियमित था। इससे आमने-सामने की सामाजिक बातचीत और ध्यान अवधि बढ़ गई।

अब (वर्तमान): बच्चे बहुत कम उम्र से डिजिटल रूप से ढूँढे हुए हैं। औसतन, कई बच्चे अपने दिन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा स्क्रीन पर बिताते हैं। जबकि यह

अविश्वसनीय सीखने के अवसर प्रदान करता है, यह अधिक गतिहीन जीवन शैली में भी योगदान कर सकता है, आमने-सामने बातचीत कम हो सकती है, और संभावित रूप से कम ध्यान अवधि। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया भी साइबरबुलिंग और सामाजिक तुलना दबाव जैसी चुनौतियों को कम उम्र में पेश करते हैं।

पेरेंटिंग एंड प्रोटेक्शन: स्वायत्तता बनाम। सुरक्षा एक बच्चे की भूमिका और पालन-पोषण के दृष्टिकोण की धारणा नाटकीय रूप से बदल गई है।

फिर (अतीत): बच्चों को अक्सर अधिक स्वायत्तता और स्वतंत्रता दी गई थी। पर्यवेक्षण का सामान्य स्तर कम तीव्र था, एक सामाजिक अपेक्षा के साथ कि बच्चे अपने पर्यावरण की खोज और छोटे मुद्दों को स्वयं हल कर सकते हैं।

अब (वर्तमान): पालन-पोषण की शैलियाँ, जो अक्सर सुरक्षा संबंधी चिंताओं से प्रेरित होती हैं, संरक्षण और निरंतर भागीदारी को प्राथमिकता देती हैं। बचपन को एक अलग, संरक्षित चरण के रूप में देखा जाता है, और बच्चों को श्रम जैसी वयस्क कठिनाइयों से बचाने के लिए नीतियां सामने आई हैं। पालन-पोषण पर अधिक ध्यान

दिया जाता है, तथा परिवार अक्सर बच्चों के प्रति अधिक केंद्रित हो जाते हैं। हालांकि, इससे अक्सर को कम उम्र से ही शैक्षणिक दबाव और तनाव का सामना करना पड़ा है, जिससे बचपन में चिंता और अवसाद में वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष: विकासशील बच्चों की चुनौती बचपन का परिवर्तन रवेहतरर या रबुशरर की एक साधारण कहानी नहीं है, लेकिन व्यापार-ऑफ में से एक है। आधुनिक बच्चे को आम तौर पर अधिक संरक्षित किया जाता है, सूचना तक बेहतर पहुंच होती है, और विकासवात्मक जरूरतों पर ध्यान केंद्रित करने से लाभ होता है। हालांकि, उनके पास स्वतंत्र समस्या-समाधान के बुनियादी कौशल और शारीरिक और कल्पनाशील लाभों का अभाव हो सकता है जो लंबे समय तक असंरचित खेल से आते हैं।

आज माता-पिता और समाज के लिए चुनौती यह है कि स्वायत्तता, लचीलापन और वास्तविक, अनसंक्रटेड मानव कनेक्शन की आवश्यक आवश्यकता के साथ डिजिटल युग के लाभों को संतुलित किया जाए ताकि रतबरे के सरल सुख और महत्वपूर्ण विकासवात्मक अवसर पूरी तरह से संरचित, डिजिटलीकृत अबा। सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रतिष्ठित शिक्षाविद स्ट्रीट कुर चंद एमएचआर मालोत पंजाब

पर्यावरण संकट : नीतियों से नहीं, नागरिक चेतना से बचेगी प्रकृति

पेड़ लगाने की बात आए तो उत्साह केवल सरकारी अभियानों और फोटो अवसरों तक सीमित रह जाता है। वृक्षारोपण दिवस पर पौधे लगाए जाते हैं और अगले दिन भुला दिए जाते हैं। संरक्षण की जिम्मेदारी कोई नहीं लेता। यही कारण है कि आँकड़ों में लाखों पौधे लगते हैं, पर धरातल पर जंगल घटते जाते हैं। एक पुरानी कहावत है—मनुष्य जीवन भर नौ मन लकड़ी लेकर जाता है, तो कम से कम अपने पीछे नौ मन पेड़ छोड़ जाना चाहिए। यह कहावत आज के समय में कहीं अधिक प्रासंगिक है। हम अपने जीवन में जितने संसाधन उपभोग करते हैं, क्या उनके बराबर कुछ लौटाने का प्रयास करते हैं?

पर्यावरण संरक्षण की बहस अक्सर एक सुविधाजनक दिशा में मोड़ दी जाती है—सरकारी नीतियाँ नहीं बनती, मंत्रालय निष्क्रिय हैं, कानून कायात्तक

सीमित हैं। यह आलोचना पूरी तरह गलत नहीं है। केंद्रीय और राज्य स्तर पर पर्यावरण मंत्रालयों का कारिकांड देखें तो विकास परियोजनाओं के सामने प्रकृति अक्सर सबसे हल्के बलि चढ़ती दिखती है। जंगलों की कटाई, नदियों का प्रदूषण, जहरीली हवा और भूजल का संकट—इन सबके लिए नीतिगत विलफला जिम्मेदार हैं। पर यह अधूरा सच है। पूरा सच यह है कि पर्यावरण संकट की जड़ें हमारी अपनी जीवन-शैली में गहरी धँसी हुई हैं।

हमने पर्यावरण को सरका का विषय मान लिया है, जैसे वह नागरिक जीवन से अलग कोई विभागीय फाइल हो। यह मानसिकता ही सबसे बड़ा संकट है। हवा, पानी, मिट्टी और जंगल किसी मंत्रालय की संपत्ति नहीं, बल्कि सामूहिक उत्तरदायित्व हैं। जब नागरिक स्वयं को इस उत्तरदायित्व से अलग कर लेता है, तब कोई भी नीति प्रभावी नहीं रह जाती।

आज प्रदूषण का बड़ा हिस्सा किसी कारखाने से नहीं, बल्कि रोजमर्रा के घरेलू व्यवहार से पैदा हो रहा है—अत्यधिक निजी

वाहन, बेहिसाब प्लास्टिक, अनियंत्रित कचरा, पानी और बिजली की फिजूलखर्ची। हम सुविधाओं को अधिकार मानते हैं और उनके दुष्परिणामों को व्यवस्था की समस्या। यही सोच पर्यावरण को धीरे-धीरे बर्बादी की ओर धकेल रही है। भारत जैसे विकासशील देश में पर्यावरण संरक्षण को अक्सर विकास विरोधी बताकर खारिज कर दिया जाता है। यह एक कृत्रिम और भ्रामक बहस है। सच्चाई यह है कि प्रकृति का विनाश स्वयं विकास के खिलाफ है। बाढ़, सूखा, गर्मी की चरम लहरें, जल संकट और बीमारियाँ—ये सब उसी "विकास" की देन हैं, जो प्रकृति के संतुलन को नजरअंदाज करता है।

लेकिन इस बहस में भी नागरिक की भूमिका गौण बना दी जाती है। हम यह नहीं पूछते कि हमारे विकास के मॉडल में हमारी व्यक्तिगत आदतें कितनी जिम्मेदार हैं। क्या हर छोटी दूरी के लिए कार निकालना जरूरी है? क्या हर शादी, समारोह और त्योहार में अनावश्यक दिखावा आवश्यक है? क्या एकल-उपयोग प्लास्टिक के बिना जीवन

असंभव है? इन सवालोंने से हम बचते हैं, क्योंकि इनके जवाब हमें असहज करते हैं। पर्यावरण संरक्षण केवल कानूनों और नियमों से संभव नहीं। यह नागरिक चरित्र और सामाजिक संस्कार का प्रश्न है। जिन देशों में पर्यावरणीय अनुशासन दिखाई देता है, वहाँ केवल सख्त कानून नहीं, बल्कि नागरिकों की आदतें ही अनुशासित हैं। भारत में पर्यावरण यह है कि हम अधिकारों को लेकर अत्यंत सजग हैं, पर कर्तव्यों को लेकर लगभग उदासीन।

हम अपने घर के बाहर गंदगी फैलाने में संकोच नहीं करते, पर स्वच्छता की अपेक्षा सरकार से करते हैं। हम नदियों को पूजा के नाम पर प्रदूषित करते हैं, फिर उनकी सफ़ाई के लिए आंदोलन करते हैं। यह विरोधाभास हमारी सामाजिक मानसिकता को उजागर करता है।

पेड़ लगाने की बात आए तो उत्साह केवल सरकारी अभियानों और फोटो अवसरों तक सीमित रह जाता है। वृक्षारोपण दिवस पर पौधे लगाए जाते हैं और अगले दिन भुला दिए जाते हैं। संरक्षण

की जिम्मेदारी कोई नहीं लेता। यही कारण है कि आँकड़ों में लाखों पौधे लगते हैं, पर धरातल पर जंगल घटते जाते हैं।

एक पुरानी कहावत है—मनुष्य जीवन भर नौ मन लकड़ी लेकर जाता है, तो कम से कम अपने पीछे नौ मन पेड़ छोड़ जाना चाहिए। यह कहावत आज के समय में कहीं अधिक प्रासंगिक है। हम अपने जीवन में जितने संसाधन उपभोग करते हैं, क्या उनके बराबर कुछ लौटाने का प्रयास करते हैं?

आज पेड़ लगाना कोई महान कार्य नहीं रहा, बल्कि एक न्यूनतम नैतिक दायित्व बन चुका है। इसके बावजूद हम इसे टालते हैं। जगह, समय, पानी और देखभाल—हर चीज का बहाना हमारे पास है। सच्चाई यह है कि हमने सुविधा को प्राथमिकता और जिम्मेदारी को छोड़ मान लिया है।

पेड़ न लगाना केवल पर्यावरणीय लापरवाही नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के जीवन के साथ अन्याय है। यह एक ऐसा अपराध है, जिसकी सजा हमारे बच्चे चुकाएँगे—गंदी हवा, जहरीला पानी और अस्मरुक्षित भविष्य के रूप में।

यह कहना भी सही नहीं होगा कि सरकारी की कोई भूमिका नहीं है। पर्यावरणीय कानूनों का सख्ती से पालन, परियोजनाओं का ईमानदार पर्यावरणीय आकलन, प्रदूषकों पर कठोर दंड और स्थानीय निकायों को सशक्त करना—ये सब अनिवार्य हैं। पर इतिहास गवाह है कि जब समाज निष्क्रिय हो, तब सबसे अच्छे कानून भी निष्प्रभावी हो जाते हैं।

स्वच्छ भारत अभियान इसका उदाहरण है। जहाँ नागरिकों ने भागीदारी दिखाई, वहाँ परिणाम दिखे। जहाँ इसे केवल सरकारी योजना समझा गया, वहाँ स्थिति जस की तस रही। पर्यावरण संरक्षण भी इसी सिद्धांत पर काम करेगा।

पर्यावरण संकट का समाधान किसी एक बड़े निर्णय में नहीं, बल्कि लाखों छोटे नागरिक निर्णयों में छिपा है। घर-घर कचरा पृथक्करण, वर्षा जल संचयन, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग, ऊर्जा-सक्षम उपकरण, स्थानीय स्तर पर वृक्षारोपण—ये सभी कदम साधारण हैं, पर प्रभावशाली हैं। रकूलों और विश्वविद्यालयों में

पर्यावरण शिक्षा को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर व्यवहार में उतारना होगा। बच्चों को प्रकृति से जोड़ना होगा, ताकि वे केवल जानकारी नहीं, संवेदना भी विकसित करें। मीडिया और सामाजिक संगठनों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। पर्यावरण को केवल लापरवाह या दिवस के रूप में नहीं, बल्कि रोजमर्रा की चिंता के रूप में प्रस्तुत करना होगा।

अंततः पर्यावरण संकट का सबसे ईमानदार उत्तर हमें स्वयं से पूछना होगा—हम प्रकृति को क्या दे रहे हैं? जब तक यह प्रश्न हर नागरिक के मन में नहीं उठेगा, तब तक नीतियाँ आती-जाती रहेंगी और प्रकृति चुपचाप नष्ट होती रहेगी।

प्रकृति किसी मंत्रालय की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि सामूहिक चरित्र की परीक्षा है। और इस परीक्षा में अब तक हम असफल ही रहे हैं। अब भी समय है—यदि हम सच में विकास चाहते हैं, तो उसे प्रकृति के साथ सांभलकर लेना होगा, वरना आने वाली पीढ़ियाँ हमें कभी माफ नहीं करेंगी।

लोगों ने पहली बार एक नया रंग देखा : डॉ विजय गर्ग

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले और वाशिंगटन विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने एक अभूतपूर्व अध्ययन में दावा किया है कि उन्होंने पांच व्यक्तियों को उस रंग को समझने में सक्षम बनाया है जो पहले नग्न मानव आंख से अदृश्य था। इस पहले कभी न देखे गए रंग को, जिसे प्रतिभागी असाधारण रूप से संतृप्त नीले-हरे रंग के रूप में वर्णित करते हैं, का नाम एओलोरे रखा गया है साइंस एडवॉंस जर्नल में प्रकाशित यह खोज एक अग्रणी तकनीक पर निर्भर करती है, जो वैज्ञानिकों को रेटिना में एक विशिष्ट प्रकार के फोटोरेसेप्टर कोशिका को चयनात्मक रूप से उत्तेजित करके मानव दृष्टि की प्राकृतिक सीमाओं को दृष्टिकारण करने की अनुमति देती है। एओलोरे के पीछे का विज्ञान मानव आंखें आमतौर पर तीन प्रकार की प्रकाश-संवेदनशील कोशिकाओं के माध्यम से रंग को समझती हैं जिन्हें शंकु कहा जाता है एल शंकु (लंबी तरंग दैर्घ्य, लाल के प्रति संवेदनशील) एम शंकु (मध्यम तरंग दैर्घ्य, हरे रंग के प्रति संवेदनशील) और शंकु (छोटी तरंग दैर्घ्य, नीले रंग के प्रति संवेदनशील) प्राकृतिक प्रकाश की स्थिति में, हम जो भी रंग देखते हैं, वह इन शंकुओं के संयोजन

को उत्तेजित करता है, क्योंकि उनकी संवेदनशीलता एक दूसरे से मिलती-जुलती होती है। मस्तिष्क इन संकेतों के अनुपात की व्याख्या करके हमारे द्वारा अनुभव किए जाने वाले रंग का विशाल स्पेक्ट्रम तैयार करता है। यूसी बर्कले के डॉ विजय गर्ग के नेतृत्व में शोध दल ने एओलोर विजन सिस्टम नामक एक उच्च तकनीक प्रणाली विकसित की (एमएलएड सिटी का संकेत)। यह प्रणाली उन्नत लेजर प्रौद्योगिकी और रेटिना ट्रैकिंग का उपयोग करती है: रेटिना का मानचित्रण करके व्यक्तिगत एल, एम और एस शंकुओं को सटीक रूप से ज्ञात करे और उनकी पहचान करे। एम शंकु को लक्षित करे: एल या एस शंकुओं को उत्तेजित किए बिना, सीधे और विशेष रूप से एम शंकु (हरे-संवेदनशील शंकु) पर लेजर पल्स चलाए। यह पृथक उत्तेजना एक अद्वितीय संकेत पैटर्न बनाती है - 0 (एल) : 1 (एम) : 0 (एस) का अनुमान, जिसने एओलोरे नाम को प्रकृतिकृत किया। यह संकेत मानव मस्तिष्क को प्राकृतिक दुनिया में प्राप्त होने वाली किसी भी चीज से भिन्न है। एओलोरे कैसा है? अध्ययन में भाग लेने वाले पांच प्रतिभागियों ने, जिनमें कुछ



शोधकर्ता भी शामिल थे, एओलोरे को एओलोरे संतृप्त नीला-हरा रंग या रंग-रंगीन तरंग से संतृप्त टॉलर बताया उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यद्यपि वे रंग-मेल परीक्षण में इसे अत्यधिक संतृप्त टॉलर से मिला सकते हैं, लेकिन वास्तविक अनुभव कहीं अधिक तीव्र, जीवंत और किसी भी वर्तमान प्रदर्शन प्रौद्योगिकी की क्षमताओं से परे था। जैसा कि प्रयोग के सह-नेता प्रोफेसर रेन एनजी ने कहा, यह ऐसा है जैसे हमारी आंखों की आदत से कहीं अधिक चमक और रंग डायल को चालू करना। महत्व और विवाद समर्थकों का तर्क है कि चूंकि यह तकनीक एक तंत्रिका संकेत पैटर्न उत्पन्न करती है, जिसका मानव दृश्य प्रणाली ने पहले कभी

सामना नहीं किया है, इसलिए परिणामी धारणा एक वास्तविक रनया रंग है यह उपलब्धि साबित करती है कि मानव आंख को उसके प्राकृतिक दायरे से परे रंगों को देखने के लिए प्रोग्राम किया जा सकता है और इसमें नई संभावनाएँ खुलती हैं दृष्टि विज्ञान: रंग अंधापन जैसे अपक्षयी नेत्र रोगों की बेहतर समझ और उपचार। डिस्प्ले और इमर्सिव मीडिया: भविष्य की प्रौद्योगिकियों द्वारा वर्तमान सीमाओं से परे दृश्य अनुभव बनाने की संभावना। हालांकि, आलोचकों का तर्क है कि यद्यपि तकनीकी उपलब्धि प्रभावशाली है, लेकिन रंग तकनीकी रूप से रनया नहीं है उनका तर्क है कि एओलोरे केवल एक अति-संतृप्त हरा/नील रंग है और यह धारणा मौजूदा रंग श्रेणी में आती है, भले ही इसका संतृप्ति स्तर अग्रकृतिक हो। नामकरण बहस की परवाह किए बिना, एओलोरे की खोज मानव धारणा की सीमाओं में एक दुर्लभ झलक प्रदान करती है और इसे दृष्टि विज्ञान में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर माना जा रहा है। सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर पंजाब

22 क्षेत्रीय भाषाओं को एक सूत्र में पिरोएगा

डॉ विजय गर्ग

क्षेत्रीय भाषाओं के अस्तित्व को लेकर जताई जा रही चिंता के बीच उनके संवर्धन की दिशा में बड़ी पहल हुई है। केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान और भारतीय विज्ञान संस्थान ने संयुक्त प्रयास से 'भाषा सागर' एप और पोर्टल तैयार किया है। इसके जरिये 22 भारतीय भाषाओं को एक सूत्र में जोड़ने में काफ़ी मदद मिल रही है।

काशी - तमिल संगमम में शामिल होने पहुंचे केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के निदेशक प्रो. शैलेंद्र मोहन कहते हैं कि देश को एक सूत्र में बांधने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं का संवर्धन आवश्यक है। यही कारण है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की परिकल्पना के तहत क्षेत्रों के बीच भाषा-आधारित जुड़ाव पर लगातार जोर दे रहे हैं। केंद्र सरकार उच्च शिक्षा और व्यावसायिक जीवन में भी भारतीय भाषाओं के प्रति जुड़ाव को एक नए स्तर पर ले जाने की तैयारी में है। पांचवीं तक मातृभाषा में शिक्षा को बढ़ावा देने के साथ ही कालेजों, विश्वविद्यालयों और नौकरी-व्यवसाय में लगे युवाओं को अपनी मातृभाषा या माध्यम भाषा के अलावा कम से कम एक और भारतीय भाषा सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसी सोच



का परिणाम है कि मेडिकल, इंजीनियरिंग और अन्य उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों के कई हिस्से अब विभिन्न भारतीय भाषाओं में तैयार किए जा चुके हैं। प्रो. शैलेंद्र मोहन बताते हैं कि कई उच्च शिक्षित संस्थानों ने पाठ्यक्रम में एक अतिरिक्त भारतीय भाषा सीखना अनिवार्य बनाया है। इसी को ध्यान में रखकर स्वयं पोर्टल बनाया गया है। भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलुरु के सहयोग से स्वयं प्लेटफॉर्म पर आठ भाषाओं के 12 सप्ताह

के क्रेडिट- कोर्स तैयार किए गए हैं। इन कोर्सों के माध्यम से विद्यार्थी भाषा की बुनियादी संरचना, पठन-लेखन व बोलचाल सीखते हैं। अभी तक कन्नड़, मलयाली, उड़िया, बांग्ला मराठी व पंजाबी के कोर्स उपलब्ध हैं, जबकि जनवरी से तमिल, तेलुगु, संथाली, असमिया, मणिपुरी, डोगरी, गुजराती और मैथिली आठ नई भाषाएँ जुड़ जाएंगी। सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

जमीन दलालों का जाल: सरकारी जमीन पर खुला खेल

40 हजार में खरीदी, 7-8 लाख में बिक्री, लाठीकटा तहसील और सब-रजिस्ट्रार कार्यालय की भूमिका संदेहास्पद - डॉ यादव

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला-शहर और इसके आसपास के इलाकों में जमीन दलालों का नेटवर्क तेजी से फैलता जा रहा है। आरोप है कि इन दलालों को राजस्व विभाग के कुछ सक्रिय कर्मियों, सेवानिवृत्त अधिकारियों और कर्मचारियों का संरक्षण प्राप्त है। यही वजह है कि सरकारी जमीन के दुरुपयोग और अवैध बिक्री के मामले लगातार सामने आ रहे हैं, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो पाई है।

जानकारी के अनुसार पहले सोसाइटी के नाम पर सरकारी मूल्यवान जमीन बेहद कम दर पर खरीदी जाती है। कुछ वर्षों तक जमीन को यं ही खाली छोड़ दिया जाता है, फिर तहसील और सब-रजिस्ट्रार कार्यालय के अधिकारियों की कथित मिलीभगत से उस जमीन को प्लॉटिंग कर 20 से 25 गुना अधिक कीमत पर खुले बाजार में बेच दिया जाता है।

गरीबों के लिए जमीन नहीं, पूंजीपतियों के लिए मुनाफा

एक ओर जहां गरीब और मध्यमवर्गीय परिवार वर्षों से घर बनाने के लिए सरकारी जमीन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर उपलब्ध सरकारी जमीन नौलाभा या अन्य प्रक्रियाओं के जरिए लोगों को सौंप दी जाती है। जो बाद में इससे भारी मुनाफा कमा रहे हैं।

बीते दिनों राउरकेला शहर में कुछ सोसाइटीयों के नाम पर सरकारी जमीन

हथियारक वहां अपार्टमेंट बनाए गए और प्रति फ्लैट 40 से 54 लाख रुपये में बिक्री किए जाने के मामले सामने आए। चौकाने वाली बात यह है कि इन गंभीर आरोपों के बावजूद अब तक किसी जिम्मेदार पर कार्रवाई नहीं हुई।

लाठीकटा तहसील में नया मामला, नियमों की खुली अवहेलना

अब यह मामला केवल राउरकेला शहर तक सीमित नहीं रह गया है। लाठीकटा तहसील अंतर्गत भी इसी तरह के गंभीर आरोप सामने आए हैं। हाल ही में खबरें प्रकाशित होने के बाद सोसाइटी की जमीन को बाहरी लोगों के नाम रजिस्ट्रेशन करने पर रोक लगाई गई थी, लेकिन अब फिर से साजिश रचकर जमीन की अवैध बिक्री की तैयारी की जा रही है।

लाठीकटा तहसील के अंतर्गत जल्दा पोल के दाहिने ओर स्थित लगभग 6 एकड़ सरकारी जमीन को एक सोसाइटी ने सरकारी से मात्र ₹40 हजार प्रति डिसमिल की दर से

प्राप्त किया था। सरकारी नियमों के अनुसार इस जमीन पर केवल सोसाइटी के सदस्य ही आवास बना सकते हैं और इसे बाहरी लोगों को बेचना पूरी तरह प्रतिबंधित है। इसके बावजूद जमीन दलालों द्वारा इसे ₹7 से 8 लाख प्रति डिसमिल

में बेचने की योजना बनाई जा रही है। ग्रीन जोन से येलो जोन तक का खेल

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ राजकुमार यादव ने आरोप लगाया कि "कुछ सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारियों और जमीन दलालों की मिलीभगत से इस जमीन को चुपचाप ग्रीन जोन से येलो जोन में तब्दील कर दिया गया। जबकि नियम स्पष्ट है कि ग्रीन जोन की जमीन को आवासीय उपयोग में बदला ही नहीं जा सकता।"

इसके अलावा, नियमों के अनुसार किसी भी आवासीय कॉलोनी के लिए न्यूनतम 20 फीट चौड़ी सड़क अनिवार्य है, जबकि इस क्षेत्र में मात्र 12 फीट चौड़ी सड़क मौजूद है।

सवाल उठ रहा है कि नियमों की इतनी खुली अनदेखी कैसे संभव हुई।

अग्रिम देकर फंसे खरीदार, जांच की मांग तेज

सूत्रों के अनुसार सोसाइटी की जमीन के कई प्लॉट स्थानीय और शहरी लोगों द्वारा अग्रिम राशि देकर खरीद लिए गए हैं, लेकिन रजिस्ट्री नहीं हो पाने के कारण खरीदार असमंजस और चिंता में हैं। बुद्धिजीवी वर्ग का कहना है कि यदि तहसीलदार और संबंधित विभाग निष्पक्ष जांच करें, तो सरकारी जमीन से जुड़े बड़े भ्रष्टाचार का खुलासा हो सकता है।

अवैध जमीन कारोबार से बढ़ रही आपराधिक घटनाएं गौरतलब है कि हाल ही में बीरमित्रपुर में जमीन खरीद-बिक्री को लेकर गोलीबारी की घटना सामने आई थी। यही नहीं, बिश्रा और जिले के अन्य इलाकों में भी जमीन विवाद से जुड़ी आपराधिक घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। ऐसे में अवैध प्लॉटिंग और सरकारी जमीन के दुरुपयोग पर तत्काल रोक लगाना प्रशासन के लिए बड़ी चुनौती बन गया है।

अब देखना यह है कि प्रशासन इन गंभीर आरोपों पर कब तक आंख मूंदे रहता है या फिर दौषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई कर जनता के विश्वास को बहाल करता है।

लांजीबैरना में जबरन भूमि अधिग्रहण के खिलाफ जनउमार

डालमिया भारत सीमेंट लिमिटेड के विरोध में आंदोलन को मिला एनसीपी प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव का खुला समर्थन

परिवहन विशेष न्यूज

लांजीबैरना/सुंदरगढ़।

डालमिया भारत सीमेंट लिमिटेड द्वारा लांजीबैरना क्षेत्र में कथित रूप से किए जा रहे जबरन भूमि अधिग्रहण के खिलाफ स्थानीय ग्रामीणों का आंदोलन अब निर्णायक चरण में प्रवेश करता दिख रहा है। अपनी पुरतैनी जमीन, जंगल और आजीविका की रक्षा के लिए संघर्षरत ग्रामीणों को अब राजनीतिक समर्थन भी मिलने लगा है। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के ओडिशा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने इस आंदोलन को खुला और सशक्त समर्थन देने की घोषणा की है।

डॉ. राजकुमार यादव ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि "विकास के नाम पर किसानों, आदिवासियों और ग्रामीणों के संवैधानिक अधिकारों का हनन किसी भी सुरत में स्वीकार नहीं किया जाएगा।" उन्होंने आरोप लगाया कि कंपनी प्रबंधन और शासन-प्रशासन के कुछ हिस्सों की कथित मिलीभगत से ग्रामीणों की सहमति के बिना भूमि अधिग्रहण की कोशिश की जा रही है, जो न केवल संविधान और भूमि अधिग्रहण कानूनों का उल्लंघन है, बल्कि सामाजिक न्याय की मूल भावना के भी खिलाफ है।

"जमीन नहीं तो जीवन नहीं" —



आंदोलनकारियों की हुंकार

आंदोलन में शामिल ग्रामीणों का कहना है कि जिस भूमि का अधिग्रहण किया जा रहा है, वही उनकी आजीविका, सामाजिक पहचान और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य का आधार है। उनका आरोप है कि न तो ग्रामसभा की पारदर्शी और स्वतंत्र सहमति ली गई है और न ही उचित मुआवजा, पुनर्वास एवं पुनर्स्थापन की कोई ठोस योजना सामने रखी गई है। आंदोलन में महिलाओं, युवाओं और बुजुर्गों की बड़ी भागीदारी ने इसे व्यापक जनसमर्थन प्रदान किया है, जिससे क्षेत्र में जनआक्रोश लगातार बढ़ रहा है।

प्रशासन को चेतावनी: आंदोलन को दबाने की कोशिश

बर्दाश्त नहीं

डॉ. यादव ने प्रशासन को चेतावनी देते हुए कहा कि शांतिपूर्ण जनआंदोलन को कुचलने या ग्रामीणों पर किसी भी प्रकार का दबाव बनाने की कोशिश को एनसीपी बर्दाश्त नहीं करेगी। उन्होंने कहा कि यदि जरूरत पड़ी तो पार्टी सड़क से लेकर सदन तक संघर्ष करेगी। एनसीपी की प्रमुख मांगें इस प्रकार हैं—

भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया को तत्काल प्रभाव से रोकना जाए, ग्रामसभा की स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी सहमति सुनिश्चित की जाए, प्रभावित परिवारों को उचित मुआवजा, पुनर्वास और रोजगार की ठोस गारंटी दी जाए, तथा पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभाव आकलन रिपोर्ट को सार्वजनिक किया जाए।

जनहित में संघर्ष जारी रहेगा एनसीपी ने स्पष्ट किया है कि पार्टी कॉरपोरेट दबाव के आगे झुकने वाली नहीं है और लांजीबैरना के ग्रामीणों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी रहेगी। डॉ. राजकुमार यादव ने कहा कि "यह लड़ाई केवल जमीन की नहीं, बल्कि सम्मान, अस्तित्व और न्याय की है—और इस संघर्ष में जनता की जीत सुनिश्चित है।"

झारखंड विधानसभा में ओडिय सदस्य मनोनयन, रोजी-रोजगार समेत स्वतंत्र फंड की मांग राष्ट्रपति से की जायेगी

सरायकेला - खरसावां, सिंहभूम की ऐतिहासिक महत्व को लेकर अधिकार की मांग

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

सरायकेला। महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जिस सरायकेला खरसावां जिले में आ रही हैं वह कभी ओडिशा का हिस्सा रहा। ऊपर से आदित्यपुर जो महाराजा सरायकेला आदित्य प्रताप के नाम में नामित है आज भी ओडिया लोग अपना संवैधानिक अधिकार से दूर रखे जाते हैं वहां यद्यपि इलाके में राजा से प्रजा तक विधायक बनते रहे हैं बिहार विधानसभा में। पर आज ओडिया समस्या गुंजायमान नहीं होते झारखंड के सदन में। आजाद भारत में सरायकेला खरसावां को बड़े ही शांतिराना तरीके से एक वर्ष के लिए बिहार में लाया जाता है जिसे आज तक ओडिशा को लौटाना नहीं जाना ऊपर से ओडिया लोगों की भाषा -संस्कृति, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक अधिकारों को समाप्त किया जाना एक अच्छे लोकतंत्र का परिचायक कदाचित नहीं, जिसके अन्तिम शासक राजा ने अपने रियासत को भारतीय अधिराज्य में विलय करते वक्त इकरारनामों में हस्ताक्षरित की थी ओडिया हित की बात।

सच तो यह है आदित्यपुर जहां 1200 उद्योग है पर मूल निवासी लोगों को इसका लाभ आज तक नहीं मिलना बड़ा ही दुर्भाग्यपूर्ण है। आज भी पांच पांच विशुद्ध ओडिया विधानसभा सदस्य राजा से प्रजा तक इसी सरायकेला से रहे जो ओडिया हित मार्जार एग्रीमेंट में उल्लेखित तथ्य को लेकर बिहार विधानसभा में बहसबाजी किया करते थे। परन्तु आज झारखंड विधानसभा हो या अन्य उनकी संवैधानिक पद पर से बड़े चलाकी से उन्हें नकारा जाता रहा है। अगर 1936 के स्वतंत्र उक्तल प्रदेश गठन के समय को देखा जाय तो 11 ओडिया सदस्य बिहार ओडिशा विधानपरिषद में थे तो आज झारखंड में कितने



रखे जाते हैं? संभवतः यही वजह रहा कि गणतंत्र में ओडिया गौण दिये गये हैं झारखंड में। जिसका उच्चस्तरीय जांच पड़ताल होनी चाहिए आखिर स्वतंत्र भारत में झारखंड में ओडिया गये तो गये कहां? एंलोलो-इंडियन सदस्य मनोनयन प्रक्रिया कल तक यथावत रहा जिसे अब खत्म किया गया है। 1952 से बिहार एवं 2005 से गत दिनों तक झारखंड सरकार में ये अंग्रेज सदस्य हुआ करते थे। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि झारखंड राज्य में समाहित एक ऐसा भी इलाका है जो कभी ओडिशा का अंग रहा जिसे महज एक वर्ष के लिए बिहार ने अपने पास ले रखा था। फिर उसे ओडिशा को पुनः लौटाने के बजाय सन 2000 में झारखंड को थमा दिया। अब ओडिया भाषी इलाका के लोगों के निरंतर उपेक्षा, शोषण, कारण से झारखंड विधानसभा में मनोनीत सदस्य बनने की मांग उठने लगी है।

सच तो यह है कि आज ओडिया समस्या न तो झारखंड विधान सभा में गुंजती ना ही

लोकसभा में। बिहार विभाजन विधेयक में केन्द्र के गृहमंत्री के निर्देशानुसार ओडिशा सरकार को विधानसभा कमेटी के साथ यहां हर वर्ष आना था पर वह दो बार आकर गत बीस-बाईस बरस से कभी नहीं आई। आज झारखंड के ओडिया अपना दुःख-दर्द बयान करने तो आखिर करें किसको? शिवाय महामहिम या अदालत को एंरलो-इंडियन सदस्य मिलाकर झारखंड की 82 सीटों की विधानसभा में 1 सीट इस सत्र से समाप्त कर दी गयी है। ऐसे में अब 81 रह गयी। वह अंग्रेजों के निमित्त मनो नयन होता था पर देशी ओडिया आज भी उपेक्षित रहे। सरायकेला खरसावां को मिला कर उन 26 रियासतों को ओडिशा के कटक में विलय किया गया था वह भी ओडिशा में रखे जाने हेतु। 114 दिसंबर खरसावां एवं 15 दिसंबर 1947 को सरायकेला स्टेट भारतीय अधिराज्य में शामिल हुआ। उसके बाद उसके एक राजस्व जिला का दर्जा दिया जाता है ओडिशा प्रदेश में जहां दुर्गा दास जैसे जिला अधिकारी



ओडिशा के डर से रहे। पर एक षडयंत्रकारी कदम के तहत इसे एक वर्ष के लिए बिहार सरकार अपने पास 18 मई 1948 को ले गई जिसे ओडिशा को लौटाने के बजाय 52 वर्ष तक बंदस्तूर शोषण के बाद झारखंड को थमा दिया। सच तो यह है कि न तो बिहार नही झारखंड सरकार ओडिआ हित में कुछ काम किया है आज तक। जो लोकतंत्र के लिए एक संवेदनशील व प्रसंग बनकर उभरता रियासत विलय परिप्रेक्ष्य में। झारखंड में आज यह विकास को आज मुंह चिढ़ाता है।

अनेक ओडिया संगठनों ने कहा है कि केन्द्र अविभक्त झारखंड विधानसभा में ओडिया प्रतिनिधिका मनोनीत करायें ताकि भाषा संस्कृति, आर्थिक सामाजिक, राजनीतिक अधिकार झारखंड में उनका सुरक्षित रहे। ओडिया हित में स्वतंत्र फंड प्रदान करें। लोगों ने कहा है समय आ गया है अब हेमंत सरकार एवं केन्द्र खुद मिलकर जायजा ले आज झारखंड में ओडिआ लोगों की भाषा, संस्कृति, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राजनीतिक स्तर क्यों समाप्त कर रखा गया है। आखिर क्यों नेता अधिकारियों का चरागाह बना कर रखा गया है सरायकेला खरसावां समेत तीनों सिंहभूम जिला को।

हेमंत सोरेन से मिला फेडरेशन ऑफ झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के प्रतिनिधिमंडल



कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से उनके आवासीय कार्यालय में "फेडरेशन ऑफ झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज" के प्रतिनिधिमंडल ने शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान प्रतिनिधिमंडल ने राज्य में औद्योगिक विकास, नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन तथा औद्योगिक इकाइयों से संबंधित विभिन्न विषयों पर मुख्यमंत्री के साथ विस्तृत चर्चा की। प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री को उद्योग जगत के समक्ष उत्पन्न हो रही व्यवहारिक चुनौतियों एवं उनके

संभावित समाधानों से अवगत कराया। मुख्यमंत्री ने प्रतिनिधिमंडल की बातों को गंभीरता से सुनते हुए कहा कि राज्य सरकार औद्योगिक विकास के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि उद्योग क्षेत्र राज्य की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, और "फेडरेशन ऑफ झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज" की भूमिका राज्य के आर्थिक सशक्तिकरण में अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। मुख्यमंत्री ने प्रतिनिधिमंडल को आश्चर्य से सुनते हुए कहा कि उद्योग जगत के समक्ष उत्पन्न हो रही व्यवहारिक चुनौतियों एवं उनके समाधानों से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि सरकार राज्य में व्यवसाय के वातावरण को और अधिक सरल एवं अनुकूल बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है, ताकि निवेश और रोजगार के अवसरों का विस्तार हो सके। इस अवसर पर "फेडरेशन ऑफ झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज" के अध्यक्ष आदित्य मल्होत्रा, उपाध्यक्ष राम बांगड, महासचिव रोहित अग्रवाल, सह सचिव नवजोत अलंग, सह सचिव रोहित पौडार, कोषाध्यक्ष अनिल अग्रवाल तथा कार्यकारिणी सदस्य मुकेश अग्रवाल, मनीष श्राफ एवं डॉ. अभिषेक रामाधीन उपस्थित थे।

भिखारियों ने डेरा जमाया...!

दुनिया को बताओ कहीं-कहीं डेरा जमाओगे, छोड़ी भीख मांगना कहीं से भीख लें पाओगे। सिर्फ भीख मांगने के लिए 'विदेशों' की यात्रा, सभी ने छोड़ी है 'शर्म' जलालत का है खतरा।

उन 56 हजार भिखारियों को देश से भगाया, पवित्र स्थानों पे भिखारियों ने डेरा है जमाया। ये संगठित होकर भीख मांगने वाले हैं गिरोह, विदेश जाने से रोकने में यात्रियों का अवरोह।

यूएई ने कई नागरिकों को वीजा बंद कर दिया, भीख के लिए इस देश ने जाने क्या-क्या किया।

एक शख्स ने भीख मांग एक दिन में एक लाख, ऐसी कमाई किस काम 'देश की इज्जत' खाक। (संदर्भ-पाकिस्तानी भिखारियों को धक्के मारकर भगाया।)

संजय एम तराणोकर (कवि, लेखक व समीक्षक) इन्दौर-452011 (मध्य प्रदेश)



ब्रेक फेल होने से एक ट्रक बिजली के खंभे से टकरा गया; 2 वैन और 7 से ज्यादा बाइक डैमेज हो गईं



मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओडिशा

कोरपूट/भूवनेश्वर: ट्रक ने 2 वैन और 7 से ज्यादा बाइक को टक्कर मार दी। कई एक्सीडेंट के बाद, ब्रेक फेल होने पर एक ट्रक बिजली के खंभे से टकरा गया। यह एक्सीडेंट कोरपुट जिले के सुनाबेड़ा से गुजरने वाले नेशनल हाईवे नंबर 26 पर हुआ। बताया जा रहा है कि एक्सीडेंट में ड्राइवर गंभीर रूप से घायल हो गया है। गाड़ियों को एक्सीडेंट वाली जगह से हटा दिया गया है और सड़क को नॉर्मल

कर दिया गया है। सूत्रों के मुताबिक, शुकुवार दोपहर कोरपुट में रोड पर एक ट्रक का ब्रेक फेल हो गया, जिससे RTO ऑफिस में खड़ी आठ बाइक, दो स्कूटर, एक बैकस ATM कैश डिपॉजिट गाड़ी और एक टाटा AC कुचल गई। इस हादसे में मिनी ट्रक के ड्राइवर की मौत हो गई, जबकि दो अन्य को मामूली चोटें आईं। बचाव के उपाय किए गए हैं क्योंकि रेवेन्यू मिनिस्टर सुरेश पुजारी आज उस सड़क से गुजरने वाले हैं।

प. सिंहभूम जहां मानवता हो गयी शर्मशार, गरीबी के कारण बीस रुपये की थैली में मृत बच्चे को रख पिता पहुंचा गांव

सता किसी पार्टी की भी हो 40 सिंहभूम, सरायकेला में आदिवासी मूलवासी सद्वै उपेक्षित

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

चाईबासा, जिस सिंहभूम की लोह-मैंगनीज भरा धरती राज्य व देश का खजाने को दूंस दूंस भरता आया उससे गोद में बसे मानव संपदा की माली हातत कैसी है आज यह उस बाप से पुछा जा सकता जिसके मासूम ने अस्पताल में दम तोड़ दिया तो पिता ने 20 रूपये के एक थैली खरीद कर उसमें मृत बच्चे को रख अनिन्तम संस्कार हेतु बस में चाईबासा से अपने गांव काठगढ़ पहुंचा। कारण उसके पास महज सौ रूपये ही थे। यह उस जिले की हकीकत है, एक डी एम एफ टी फंड जिसके पिता चतम्बा जिसके पास महज सौ रूपये ही थे पर उसने वाहन मांगने क्यों नहीं पहुंचा होगा यह सहज अंदाजा लगाया जा सकता उस आदिवासी बहुल जिला में। हां इतना जरूर है की इस घटना के बाद मंत्री

इरफान अंसारी ने शव ढोने वाली वाहन देने की घोषणा की, देर ही रही पर यह नेक कदम है मंत्री का। सबसे बड़ी बात तीनों सिंहभूम में आदिवासी मूलवासी जनता सद्वै नदारद है चाहे सरकार किसी की क्यों न हो। जहां तक चिकित्सा संबंधी सुविधा की बात की जाय तो उस चतम्बा परिवार को देखने से अंदाजा लगाया जा सकता जिसके आधा दर्जन बच्चे घटना के दुसरे दिन फोटो में दिख रहे हैं। बाप क्या काम करता आज उसके गांव पहुंच कर पता किया तो सब दुध का दूध और पानी का पानी दिखा हमें। बच्चों में कितने विधालय जाते, कितनी चिकित्सकीय सुविधा पहुंच पाती जनता तक यह इस मिडिया मैन भली भांती अवगत हैं विगत चार दशकों हैं।

घटना पर चाईबासा चिकित्सा अधिकारी भारतीय मिंज ने बताया कि 18 दिसंबर की शाम को 4 महीने के मासूम कृष्णा चट्टाया को गंभीर स्थिति में पीडियाट्रिक वार्ड में भर्ती कराया गया। बच्चे को 7 दिनों से तेज बुखार और लूज नहीं पहुंचा होगा यह सहज अंदाजा लगाया जा सकता उस आदिवासी बहुल जिला में। हां इतना जरूर है की इस घटना के बाद मंत्री



बच्चों का परिवार, बच्चे को अनिन्तम संस्कार के बाद

शुरू किया, खून की जांच कराई गई और ऑक्सिजन सपोर्ट पर रखा गया। डॉ. भारती मिंज के अनुसार, बच्चे की गंभीर स्थिति को देखते हुए डॉक्टरों ने उसे जमशेदपुर के एमजीएम अस्पताल रेफर करने की सलाह दी हालांकि, बच्चे के पिता ने अपनी आर्थिक स्थिति का हवाला देते हुए बाहर जाने में असमर्थता जताई और सदर अस्पताल में ही इलाज जारी रखने का अनुरोध किया। 119 दिसंबर को दोपहर करीब 1:15 बजे इलाज के दौरान बच्चे ने दम तोड़ दिया।

करने को कहा गया लेकिन शाम होने से पिताले घर पहुंचने की हड़बड़ी में बच्चे का पिता बिना किसी स्वास्थ्यकर्मियों को सूचना दिए बच्चे के शव को थैली में लेकर अस्पताल से निकल गये। सिविल सर्जन ने यह भी खुलासा किया कि बच्चे के पिता के पास न तो मोबाइल फोन था और न ही पैसे थे। अस्पताल की नर्सों और वहां मौजूद अन्य मरीजों के अटेंडेंट ने अपनी ओर से चंदा इकट्ठा कर पीड़ित पिता की मदद की थी।

डॉ. भारती मिंज ने बताया कि बीपीएल श्रेणी के मामलों में अस्पताल प्रशासन शव वाहन के इंधन (फ्यूल) का खर्च उठाता है लेकिन इसके लिए कुछ कागजी प्रक्रिया पूरी करनी होती है। इस मामले में पिता बहुत व्याकुल थे और आधिकारिक प्रक्रिया या गाड़ी के इंतजार किए बिना ही चले गए, जिसके कारण यह स्थिति उत्पन्न हुई।